संगाई (गृह पत्रिका)

चतुर्थ अंक

2019

-- पत्रिका परिवार --

संरक्षक एवं स्वत्वाधिकार : श्री सी.अंगरुप बौद्ध, प्रधान महालेखाकार

उप संरक्षक : श्री परवेज आलम, वरिष्ठ उप महालेखाकार

सुश्री एल्विना एल. लिवोन , उप महालेखाकार

संपादक

श्री प्रभात रंजन

संपादक मंडल

श्री तरुण कुमार शर्मा, हिंदी अधिकारी

श्री टी.रोजी कुमार लेखा परीक्षा अधिकारी

श्री एच. बैइते लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

श्री साइखोम मंङाल, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

संदेश

कार्यालय की पत्रिका 'संगाई' का चतुर्थ अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है| इस पत्रिका का प्रमुख उदेश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार करना तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति स्नेह उत्साह एवं रुचि उत्पन्न करना है । यह पत्रिका कार्यालय में सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति के लिए एक सार्थक मंच भी उपलब्ध कराती है।

भाषा किसी भी संस्कृति के लिए आधार प्रदान करती है और किसी भी राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का कार्य भी करती है। भारत जैसे देश जहां सैंकड़ों भाषाएं बोली जाती है, संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का दायित्व काफी अधिक बढ़ जाता है। कार्यालय हिंदी के प्रचार-प्रसार से आम जन की शासन-प्रशासन में सहभागिता बढ़ेगी। हमारा दायित्व है कि हम हिंदी के प्रसार में सहयोग करें।

पत्रिका में ज्ञानवर्धक एवं सुरुचिपूर्ण रचनाएं शामिल की गई है । उम्मीद है कि यह पत्रिका कार्यालय के साथ-साथ मणिपुर की सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रदर्शित करने में सफल साबित होगी।

मैं कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनकी सहभागिता के लिए धन्यवाद देता हूँ और कामना करता हूं कि 'संगाई' सदैव हिंदी की सेवा में समर्पित रहें |

छे. अंगरूप बौद्ध

प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)

संदेश

'संगाई' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन हमारे लिए खुशी की बात है। इस पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा निति के कार्यान्वयन का महत्वपूर्ण अंग है। उम्मीद है पिछले अंको की तरह यह अंक भी ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक और संग्रहनीय साबित होगा । इस अंक में मणिपुरी के उपयोगी शब्दों की सुची दी जा रही है जिसे अपनाकर हिंदीभाषी लोग लाभान्वित होंगे।

संघ की राजभाषा के प्रति अपने दयित्वों के निर्वहन के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। हम हिंदी के प्रचार प्रसार को अपनी प्राथमिकताओं में रखते हैं जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र को जोड़ने वाले एकता के सुत्र को अधिक मजबुत कर सकें। हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए कई तरह के कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। हिंदी शिक्षण योजना, कार्यशाला, हिंदी पखवाड़ा और हिंदी पत्रिका में भागीदारी के कारण सभी अधिकारी और कर्मचारी बधाई के पात्र हैं।

यह कार्यालय नगर राजभाषा कार्यांवयन समिति(TOLIC) का दायित्व भी वहन कर रहा है जिसके अंतर्गत नियमित रुप से बैठक आयोजित करना , केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों के तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा करना आदि कार्य शामिल है। इस कार्यालय के कार्मिक अन्य कार्यालयों में जाकर हिंदी के प्रयोग को बढावा देने का कार्य भी करते हैं। इस तरह से मणिपुर में हिंदी के प्रसार के लिए अच्छी भुमिका तैयार की गई है। इस पत्रिका के माध्यम से मैं सभी हिंदी प्रेमियों को शुभकामना देता हूँ ।

परवेज आलम

व. उप.महालेखाकार (प्रशा.)

संदेश

मुझे इस कार्यालय की पत्रिका 'संगाई' का विमोचन करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। हम अपने कार्यालय के लेखा परीक्षा के दायित्व के साथ साथ हिंदी के प्रति अपने कर्तव्य को भी भली-भाँति निभाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। यह पत्रिका मणिपुर में हिंदी के प्रसार मे अपना योगदान दे रही है और कर्यालय परिवार के सदस्यों को अपने हिंदी के प्रति अपने प्यार और साहित्यिक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने के लिए एक सुंदर मंच उपलब्ध कराती है। मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य का कामना करती हूँ।

इस कार्यालय के सभी अधिकरियों और कर्मचारियों के तत्परता, दायित्व निर्वहन हमेशा से सराहनीय रहा है। मणिपुर के सर्वांगीण विकास के लिए और अपने देश के लिए हम सभी को सेवा करने का अवसर मिला है, यह हमारे लिए गर्व का विषय है। मैं आशा करती हूँ कि आपको मणिपुर के संस्कृति के साथ-साथ सुखद बदलाव की झलक भी इस पत्रिका में देखने को मिलेगी ।
आशा है यह अंक आपको पसंद आयेगा।

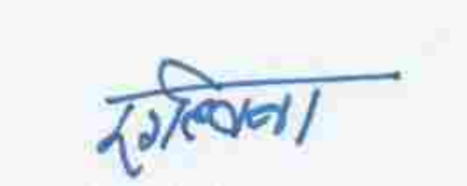

एल्विना एल. लिवोन
उप महालेखाकार

संपादकीय

मणिपुर उत्तर पूर्व भारत का एक प्यारा सा राज्य है। ऊपरी तौर पर एक समान प्रतीत होते हुए भी यह विविधताओं से भरा है। मणिपुर में कई जनजातियां हैं, कई समुदाय और संप्रदाय के लोग निवास करते हैं। यहां कई भाषाएं बोली जाती है। यहां के लोगों के जीवन में एक अद्भुत मधुरता और संतुष्टि का भाव दिखता है। सामान्य लोग भी जीवन को उत्सव की भांति जीते हैं । मानो किसी दार्शनिक की भांति अपने जीवन के मर्म को समझ लिया हो। यहां के जीवन पर कबीलाई प्रभाव है। लोग परिवार और समाज को काफी अधिक महत्व देते हैं।

मणिपुर का इतिहास काफी उथल-पुथल भरा रहा है। यह कई बार लूटा गया है, नष्ट किया गया है लेकिन लोगों के जिजीविषा के कारण यह फिर मुस्कुरा उठा है। इसके अमूर्त खूबसूरती को यहां रहकर ही महसूस किया जा सकता है। यहां गहरे भरे वादियों में रहना और हिंदी का प्रचार-प्रसार का कार्य मेरे लिए अत्यंत रोमांचक और अविस्मरणीय अनुभव है।

मणिपुर में कई ऐसी पीढ़ियां तैयार हो चुकी है जो हिंदी के समृद्ध साहित्य से लाभान्वित हुई है और इसके प्रचार-प्रसार का कार्य कर रही है। हिंदी प्रेमियों के लिए एक सुखद संदेश है। मणिपुरी साहित्य भी अत्यंत समृद्ध रहा है। ईशा के प्रथम सदी से ही यहां के राजाओं का इतिहास लिखित रूप में तैयार किया गया। जिस समय पूरा उत्तर पूर्व आदिमानव की तरह रह रहा था उस समय में यहां कई पौराणिक धर्म ग्रंथ (पुया) लिखे गए। इससे यहां के बौद्धिक जागृति का अंदाजा लगाया जा सकता है। इसके अलावा मध्यकाल और आधुनिक काल में भी कई उच्च कोटि की साहित्यिक रचनाएं देखने को मिलती है। इन रचनाओं का हिंदी और अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जाना जरूरी है ताकि साहित्यिक रसिक मणिपुर के चिंतन और परंपरा से परिचित हो सके। इस पत्रिका में इस संबंध में छोटी सी कोशिश देखी जा सकती है।

भिन्न भाषा परिवार के होने कारण मणिपुरी और हिंदी के शब्दों में समानता देखने को नहीं मिलती है। हिंदी भाषियों के लिए मणिपुरी बिल्कुल अपरिचित प्रतीत होती है। पत्रिका के इस अंक में मणिपुरी के कुछ शब्दों को प्रस्तुत किया जा रहा है। उम्मीद की जाती है कि पाठक अपनी सुविधा के अनुसार कुछ शब्दों को अपनाएंगे । ऐसा करके हम हिंदी के शब्द भंडार को बढ़ाएंगे, साथ साथ इससे हिंदी और मणिपुरी के बीच के दूरी को भी कम करने का एक महत्त कार्य संपन्न होगा।

आपके सलाह और आलोचना के इंतजार में।

आपका

(प्रभात रंजन)

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषय	रचनाकार	पृ.सं.
1	नेतृत्व	राणा कुमार बरूआ	7-8
2	शिक्षा सबके लिए	मनोज कुमार सुधांशु	9-11
3	राज कपूर : मेरा प्रिय अभिनेता	संतोष कुमार	12-13
4	ये नेत्रियां	नामब्रम चानू पूर्णशिला	14-17
5	धरती और मानव	संजीव कुमार	18
6	नागा समुदाय	अगुइ आर. नागा	19-20
7	डायोनबी: मछली वाली	वाई. सुरचंद्रा	21-23
8	बचपन की यादें	चंद्रमुखी कुमारी	24
9	दंड विधान	योगेश कुमार यादव	25-26
10	मानव सभ्यता का विकास	सदानंद यादव	27-29
11	त्याग का फल	सोराइसम विद्यालक्ष्मी देवी	30-31
12	इंकलाब	सर्वेश कुमार	32
13	हांगकांग और शोषण का चलन	अमरजीत सिंह	33-34
14	येक सलाइ	एस निंथौजाउ सिंह	35-36
15	सनामही	एस.बेमबेम लता देवी	37-38
16	लोरी गीत	अभिनव चंद्रा	39
17	उसे हिंदी नहीं आती	गुलशन कुमार	40
18	कृषि सुधार – 2022 तक दोगुनी आय की योजना	सरांथेम बेबेथोइ देवी	41-45
19	साम्राज्य और समाज	अभिमन्यु कुमार वर्मा	46-47
20	मितैई लोक संगीत	लाइश्रम बिश्वोया देवी	48-51
21	मैकाले की नीति	एस. लेत्मीनलाल हाउकिप	52-53
22	नागरी लिपि सम्मेलन		54-55
23	शब्द चयनिका		58-59
24	मणिपुरी हिंदी शब्दावली		60-62

राणा कुमार बरूआ

नेतृत्व

उसे कहने दो,उसे लड़ने दो
वो अपने हैं कोई गैर नहीं
यह पल दो पल का गुस्सा है
कोई जनम जनम का बैर नहीं|

हम कैसे भुल सकते हैं
हम इनके दम से हैं
ये जनता हैं, हम सेवक हैं
ये हमको चुन के भेजते हैं

नेतृत्व का दायित्व लिए तो
हर कार्य व्रत-सा करते हैं
भूल कोई हो याद दिलाना
मन में खोट न रखते हैं

सम्मान मिला, प्यार मिला
फूल मिला, हार मिला
ये रुठकर पत्थर ले आये
ले सकते हम मुंह फेर नहीं ।

उसे कहने दो,उसे लडने दो
वो अपने है कोई गैर नहीं
यह पल दो पल का गुस्सा है
कोई जनम जनम का बैर नहीं

क्या जाने कल क्या हो
मेरे पद पर कोई दूजा हो
मैं खड़ा रहुं याचक बनकर
वह बैठा हो सिंहासन पर

उस दिन भी सर न नीचा हो
मैं बात कर सकुं तनकर
चुका नहीं कर्तव्य से मैं
देख लो इतिहास पलटकर

गर मुझसे कोई बेहतर हो
तो उसको हीं अवसर दो
लोकतंत्र जिंदा रह सकता
परिवर्त्तन के बगैर नहीं ।

उसे कहने दो,उसे लड़ने दो
वो अपने हैं कोई गैर नहीं
यह पल दो पल का गुस्सा है
कोई जनम जनम का बैर नहीं|

शिक्षा सबके लिए

मनोज कुमार सुधांशु

तानसेन कतेक रवि वर्मा कते
घास छीलथि बागमतीक कछेड़मे
कालिदास कतेक विद्यापति कते
छथि हेडायल महिसवारक हेड़ में
अन न छै कैंचा न छै कोड़ी न छै
गरीबक नेना कोना पढतैक रे ?

जनकवि बाबा नागार्जुन व्यवस्था से, समाज से, सरकार के सामने एक बहुत ही मौलिक प्रश्न उठाते हैं कि भौतिक वस्तुओं के अभाव में गरीबों का बच्चा किस तरह से पढ़ाई कर सकेगा। अगर इन बच्चों के प्रतिभा को सही ढंग से विकसित होने का अवसर दिया जाता तो यह भी तानसेन के समान महान गायक बन पाता। रवि वर्मा की तरह महान चित्रकार बन पाता। लेकिन आज अभाव में बागमती के किनारे घास काटने में अपना समय बर्बाद कर रहा है। इन भैंस चराने वाले अनपढ़ बच्चों में से भी कई विद्यापति और कालिदास के समान विद्वान हो सकते थे। लेकिन उन्हें सही मार्गदर्शन नहीं मिल पाया। वस्तुतः नागार्जुन की ये पंक्तियां संपूर्ण विश्व के बुद्धिजीवियों के लिए एक नसीहत है, एक सबक है ।

बच्चे किसी देश का भविष्य होते हैं। हम अपने बच्चों को जो शिक्षा देंगे, जो संस्कार देंगे उसी से कल हमारा संपूर्ण देश पोषित होगा। सभी अपने बच्चों को लेकर काफी संवेदनशील रहते हैं और उनके पालन पोषण और शिक्षा को लेकर सुंदरतम व्यवस्था करने की कोशिश की जाती है। विकसित देश इन्हें अपने लिए सबसे महत्वपूर्ण संसाधन मानते हैं और इन पर करोड़ों अरबों डॉलर का खर्च करते हैं। उन्हें लगता है कि यह खर्च व्यर्थ नहीं जाएगा बल्कि आने वाले भविष्य के लिए एक बहुत बड़ा निवेश होगा। इसी तरह हर माता-पिता अपने बच्चों के लिए श्रेष्ठ व्यवस्था करना चाहते हैं लेकिन उनके भौतिक दशा का उसके परिवारिक आमदनी का इस पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है। भारत जैसे विकासशील देश के अधिकांश मध्यम वर्ग के लोग अपने दैनिक जीवन के काम में और अपने मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति में इस कदर उलझे होते हैं कि अपने बच्चों के लिए चाह कर भी आवश्यक वातावरण और शिक्षा उपलब्ध नहीं करा पाते हैं।

बच्चे उम्र की उस अवस्था में होते हैं जब उन्हें आसानी से भाषा, ज्ञान- विज्ञान, संस्कृति आदि आसानी से सिखाया जा सकता है। उसका शरीर नए चीजों को आसानी से स्वीकार करने के लिए तैयार होता है। उस समय उन्हें उचित प्रशिक्षण देकर किसी भी सांचे में ढाला जा सकता है। लेकिन वह खुद के लिए उपार्जन नहीं कर सकता या खुद के भविष्य के लिए गहन रुप से विचार नहीं कर सकता है। यह उसके माता पिता और शिक्षकों का दायित्व होता है। लेकिन अगर अर्थ के अभाव में उसका सही पालन-पोषण, शिक्षण, प्रशिक्षण नहीं हो पाता है तो वह एक सामान्य आदमी बन कर रह जाता है। इसलिए हर बच्चों को उसके मां बाप के स्थिति से प्रभावित हुए बिना उचित शिक्षा और प्रशिक्षण का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। उन्हें हर तरह का मौका जरूर दिया जाए कि उसके व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास हो सके। आगे यह उसके व्यक्तिगत क्षमता पर निर्भर करेगा कि वह अपना विकास किस हद तक कर पाएगा।

हर लोगों के लिए उचित शिक्षा का नहीं मिल पाना एक सार्वभौमिक समस्या है। प्राचीन काल में भी समाज के वंचित लोग शिक्षा के लिए संघर्ष करते दिखे हैं। हमारे इतिहास में कई ऐसे प्रसंग देखने को मिलते हैं जब बच्चे अपने शिक्षा के लिए संघर्ष करते हैं और व्यवस्था को कटघरे में खड़े करते हैं। कर्ण, एकलव्य आदि ऐसे ही उदाहरण हैं। इस तरह की समस्या विश्व के हर भाग में देखने को मिल जाती है। संपन्न लोग के बच्चे सही ढंग से शिक्षित और प्रशिक्षित हो पाते हैं लेकिन हाशिये के लोग इन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति से भी वंचित रह जाते हैं। अमृता प्रीतम लिखती हैं-

हुनरा भुक्ख रोटिए !
प्यार भुक्खा गोरिये !
काहदा है रुख निजाम दा
फल कोई लगदे नहीं। (पंजाबी)

(ऐ रोटी! हुनर भूखों मरता है। ऐ गोरी ! प्यार भी तो भूखा है। यह सामाजिक व्यवस्था का पेड़ कैसा है कि इसमें कोई फल नहीं लगता है।)

बच्चों के लिए शिक्षा पूर्णता नि:शुल्क होनी ही चाहिए। यह गुणवत्तापूर्ण जीवन के लिए अत्यंत जरूरी है। लेकिन इस तथ्य से परिचित होने पर भी इसे किसी राजनीतिक पार्टी द्वारा अपने पार्टी के एजेंडे में ऊपर नहीं रखा गया है। जहां तक भारत का संदर्भ है, कोई भी छात्र संगठन भी इस मुद्दे को लेकर गंभीर नहीं दिख रहा है। लोकलुभावन कार्य और वादे किए जाते हैं लेकिन जो सबसे जरूरी चीज है हमारे कल के लिए, उसे अनदेखा किया जा रहा है। आज शिक्षा देना एक कर्तव्य नहीं बल्कि रोजगार बन गया है । विद्यालय का उद्देश्य अधिकाधिक धन प्राप्त करना हो गया है। सरकार की उदासीनता के कारण निजी विद्यालय छात्रों से मनमर्जी पैसे वसूल कर रहे हैं। संवैधानिक प्रावधानों के कारण भारत में निजी विद्यालयों में कुछ सीट गरीबी रेखा के नीचे के छात्रों के लिए अवश्य आरक्षित रखे जाते हैं, लेकिन उन छात्रों के साथ किस तरह का व्यवहार किया जाता है, यह भी जांच का विषय हो सकता है। यह विचारणीय है कि हमारे लाखों छात्रों में से कुछ हजार को ही सही शिक्षा क्यों मिले। सभी के लिए सुंदर अवसर क्यों नहीं प्रदान कर पा रहे हैं। आज विज्ञान और तकनीकी के सुखद योगदान के कारण संसाधनों का अभाव नहीं है । अब कोई भूख से मरता है तो संसाधनों का अभाव नहीं बल्कि उसके प्रबंधन की कमी है। हम सभी बच्चों के लिए श्रेष्ठ शैक्षणिक माहौल क्यों नहीं दे सकते हैं? जीवन तो सभी का कीमती है। विद्यालय का उद्देश्य उन्हें सिर्फ साक्षर बनाना नहीं होना चाहिए बल्कि तेजी से परिवर्तनशील विश्व के लिए उपयोगी होना भी सिखाना चाहिए। महान शायर साहिर लुधियानवी इन्हीं सवालों का जवाब ढूंढ रहे हैं-

तुम रक्स (नाच) करो, मैं शेर पढूं
मतलब तो है कुछ खैरात मिले
इस कौम के बच्चों की खातिर
कुछ सिक्कों की सौगात मिले
लेकिन इस भीख की दौलत से
कितने बच्चे पढ़ सकते हैं
इल्म और अदब की मंजिल के
कितने जीने चढ़ सकते है ।
दौलत की कमी ऐसी तो नहीं
फिर भी गुरबत का राज है क्यों ?

शिक्षा को दौलत का आश्रित होना समाज और राष्ट्र दोनों के लिए खतरनाक है। हम जितना जल्दी इस चीज को समझ लेंगे उतना ही अच्छा है। अपने बच्चों के लिए उसके सुखद भविष्य के लिए और संपूर्ण मानवता के लिए हमें सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली को सबके लिए सुलभ बनाना ही होगा।

ये जुल्म नहीं तो फिर क्या है,
पैसे से तो काले धंधे हों
और मुल्क की वारिस नस्लों की
तालीम की खातिर चंदे हों
अब काम नहीं चल सकने का
रहम और खैरात के नारे से
इस देश के बच्चे अनपढ़ हैं
दौलत के गलत बंटवारे से।

द्वौ अम्भसि निवेष्टव्यौ गले बद्ध्वा दृढां शिलाम् !
धनवन्तम् अदातारम् दरिद्रं च अतपस्विनम् !!

दो प्रकार के लोगों के गले में पत्थर बांधकर उन्हें समुद्र में फेक देना चाहिए, पहले वे व्यक्ति जो अमीर होते हैं पर दान नहीं करते हैं और दूसरे वे जो गरीब होते हैं लेकिन कठिन परिश्रम नहीं करते ।

राज कपूर : मेरा प्रिय अभिनेता

संतोष कुमार

मैं पाठकों के लिए अपने प्रिय राज कपूर के प्रति अपने प्यार को व्यक्त करने के लिए यह रचना प्रस्तुत कर रहा हूँ। राज कपूर के बारे में वर्षों से कई चर्चाएं हुई हैं, लेख लिखे गए हैं और आगे भी उन्हें याद किया जाता रहेगा। बीसवीं सदी में भारत के महान फिल्मकार के रूप में ही नहीं बल्कि एक इंसान के रूप में भी उसकी याद कभी भुलाई नहीं जा सकती है ।

राज कपूर का जिक्र आते हैं लगता है दुख के बादलों के बीच एक बिजली चमक उठी हो। द्वितीय विश्व युद्ध से तबाह और लुटे हुए लोग राज कपूर की फिल्मों में सुकून पाते थे। गरीबी के दलदल में फंसे लोग भी उनकी फिल्मों को देखकर कुछ पल के लिए अपनी हकीकत और दुख दर्द को भूलकर मुस्कुरा उठते थे। उनकी फिल्मों से जीवन की प्रेरणा मिलती है और उसके गीत थके मन के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। उनका भोला भाला फिल्मी चरित्र “राजू” समाज के हर वर्ग के लोगों द्वारा सराहा गया और चाहा गया।

राज कपूर सिनेमा निर्माण के हर पहलू के जानकार थे। इसके साथ- साथ उनके सफल होने का कारण था- जादुई व्यक्तित्व और दूरदर्शी सोच। एक महान कलाकार की तरह डूब कर सृजन करते और एक सफल व्यवसायी के रूप में समय की मांग को भी ध्यान में रखते थे। वे बहुत ही जुनून और यकीन के साथ अपनी फिल्म बनाते थे। राज कपूर के बिना आवारा, श्री 420, जागते रहो, जिस देश में गंगा बहती है, संगम जैसी महान फिल्मों की हम कल्पना नहीं कर सकते हैं। कई फिल्में अपनी शुरुआती दौर में व्यवसायिक रूप से असफल रहने पर भी बाद भी दर्शकों द्वारा काफी सराही गयी और उसके जिक्र के बिना भारतीय सिनेमा का इतिहास अधूरा है। ‘मेरा नाम जोकर’ ऐसा ही उदाहरण है जो कला की दृष्टि से काफी उम्दा है।

राज कपूर ने सिनेमा के साथ-साथ अपने जीवन को भी कई रंगों से सजाया संवारा। हम उनके व्यक्तित्व में कई चटक रंग देखते हैं मानो वह अपने जीवन की पटकथा पहले से ही तैयार रखे हों। एक कलाकार के साथ-साथ वो एक चिंतक और एक दार्शनिक भी थे। वे जीवन पर्यंत एक रूमानी और दिल फेंक आशिक बने रहे।

कलाकार का सामाजिक दायित्व होता है और राज कपूर इस बात को हमेशा ध्यान में रखते थे। सामाजिक परिवर्तन में सिनेमा की जादुई शक्ति का उन्हें एहसास था और इसलिए उन्होंने अपने सिनेमा में मनोरंजन के साथ-साथ हमेशा सामाजिक सीख देने की कोशिश की। उदाहरण के लिए, ‘प्रेम रोग’ फिल्म में उसने विधवाओं के साथ होने वाले शोषण के खिलाफ संदेश देने की कोशिश की है।राज कपूर जैसे असाधारण व्यक्तित्व के लोग सदियों में कभी-कभी पैदा होते हैं। वह अपने आप में अद्वितीय थे। राज कपूर ना पहले कभी हुआ और ना कभी होगा। भूतो ना भविष्यति। अफसोस है कि इस तरह के व्यक्तित्व विकसित करने की हमारे पास कोई संस्था या पद्धति नहीं है। सिनेमा के लिए, संगीत के लिए, भव्यता के लिए, खूबसूरती के लिए, दोस्ती के लिए राजकपूरी जुनून दुर्लभ है।

समाजवाद बहुत ही खूबसूरत स्वप्न की भांति था। दुनिया के करोड़ों लोगों को रोटी मिलेगी, कपड़ा मिलेगा, अधिकार मिलेगा, किसी का शोषण नहीं होगा, किसी की आंखों में आंसू नहीं रहेगा..... राज कपूर की फ़िल्में इन्हीं खूबसूरत सपनों को समेटे हुए हैं। मोटी-मोटी पुस्तक में कैद समाजवाद को निकाल कर पर्दे पर डाल दिया। अफसोस! अगर समाजवाद के मसीहे इस राजकपूरी रंग में रंगे होते तो उन पर खून के छींटे नहीं होते और ना ही समाजवाद कब्र में दफन होता। सच कहें तो समाजवाद अपने सबसे खूबसूरत रूप में राज कपूर की फिल्मों में ही साकार हो पाया है।

राज कपूर दोस्तों के दोस्त थे। अपने समय के लगभग सभी कलाकार के जीवन से जुड़े रहे और उन्हें किसी न किसी रूप में प्रभावित किए। राज कपूर का जिक्र करते वक्त उनकी आंखों में खुशी की चमक देखी जा सकती है। हर खुशी में, हर पर्व-त्यौहार में,फिल्मों से संबंधित किसी पार्टी में अपने सभी लोगों को इकट्ठा करते और साथ मिलकर नाचते गाते थे। राज कपूर के आर के स्टूडियो की होली का इंतजार सभी लोगों को रहता था। राज कपूर की जान पहचान के कोई भी लोग उसके पास से निराश नहीं लौटे। हर मुसीबत में उन्होंने दोस्तों का साथ दिया। राज कपूर अपने पिता की भांति ही खुद्दार और बड़े दिल वाले थे। वे कवियों और शायरों की मंडलियों के बीच हमेशा घिरे रहते थे।

राज कपूर अपने फिल्म की अभिनेत्रियों के प्रति भी काफी अधिक संवेदनशील होते थे। उन्हें सुंदरम रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे। उनके फिल्मों में काम करने वाले अभिनेत्रियों में नरगिस, वैजयंती माला, पद्मिनी, डिंपल कपाड़िया, जीनत अमान, मंदाकिनी, पद्मिनी कोल्हापुरी आदि का नाम प्रमुख है। इन अभिनेत्रियों के सौंदर्य और अभिनय राज कपूर के स्पर्श से अपने चरम पर पहुंचा जिसके सम्मोहन में आम आदमी के साथ-साथ अभिनेत्रियां स्वयं भी बंध गईं। उनकी फिल्मों का जिक्र राज कपूर के बिना बेईमानी है।
राज कपूर को चार्ली चैपलिन का भारतीय रूप कहा जाता है। निसंदेह राज कपूर चैप्लिन से प्रभावित थे। उनकी आंखों में दर्द और खुशी को एक साथ धारण करने की छवि को राज कपूर ने भारतीय रंग में रंग कर दर्शकों के सामने सफल प्रस्तुति दी।

राज कपूर ने कई कलाकारों के साथ काम किया लेकिन कुछ कलाकार स्थाई रूप से उनके साथ बने रहे। अभिनेत्री नर्गिस के साथ उसकी जोड़ी को आदर्श जोड़ी माना जाता था। उन दोनों ने आग, आवारा, बरसात, चुपके चुपके, श्री 420 जैसी कई बेहतरीन फिल्में दी। उनके गीत प्रायः शैलेंद्र ही लिखते जिसमें अद्भुत सादगी होता था। इसी तरह उसके व्यक्तित्व को शोभित करता मुकेश की आवाज हमेशा राज कपूर के साथ बनी रही । उनके लिए मीठे मीठे संगीत की रचना शंकर- जयकिशन करते थे। यह कलाकार राज कपूर के फिल्म के आधार स्तंभ थे और राज कपूर के जीवन के भी अभिन्न अंग बने रहे। जीवन के सफर में ये एक एक कर बिछडते चले गए। अंततः 1988 में राज भी इस दुनिया के रंग मंच से विदा ले लिए।

"हर कलाकार -चाहे वह कोई भी हो और किसी भी सृजनात्मक विधा से संबद्ध हो- का अधिकांश काम आत्मकथात्मक होता है। उसके अनुभव का कुछ अंश उसके काम से अवश्य जुड़ा होता है, और यह अनुभव संचित होकर किसी न किसी रूप में अभिव्यक्त होता रहता है। यही सृजन की प्रक्रिया है।"

- राजकपुर

ये नेत्रियां

नामब्रम चानू पूर्णशिला

किसी की ख्याति उसके महानता का परिचायक नहीं हो सकती है। हो सकता है कोई व्यक्ति नैतिक दृष्टि से उन्नत नहीं हो और उसे पर्याप्त ख्याति मिली हो। यह भी हो सकता है कि कोई बहुत महान हो और उसे उसके पड़ोस के लोग भी नहीं जानते हो। बहरहाल मैं अपने इस निबंध में उन महान महिलाओं का जिक्र करने जा रही हूं जो अपने कार्यों, प्रयासों और चिंतन के लिए हमेशा से प्रेरणा का स्रोत रही हैं। हालांकि इन्हें मुख्यधारा के चिंतन और हिंदी साहित्य में जगह नहीं दिया गया है। मैं व्यक्तिगत रूप से इनसे काफी प्रभावित रही हूं और चाहती हूँ कि इस पत्रिका के पाठकों को भी इन हस्तियों से परिचित कराऊं और इनके संबंध में अपने विचारों से अवगत कराऊं।

इस कड़ी में **बिंबावती मंजरी** से शुरुआत करती हूँ। इसे 'मणिपुर की मीरा' कहा जाता है। मीरा और इसके जीवन में अद्भुत साम्य है। मीरा 16 वीं सदी की एक राजस्थानी संत और कवयित्री थी । उसका जन्म राठौर राज परिवार में हुआ था और उसकी शादी सिसोदिया परिवार के भोजराज से हुई थी। वह बचपन से ही कृष्ण की अनन्य भक्त थी । तत्कालीन सामाजिक और परिवारिक मर्यादा को तोड़कर वह साधुओं के साथ तीर्थ यात्रा पर निकली। वह हमेशा कृष्ण के महाभाव में खोई रहती तथा भक्ति रचनाओं से अपने प्रेम और वियोग की भावनाओं का इजहार करती थी। उसकी मृत्यु का रहस्य अज्ञात रहा।

बिंबावती मंजरी भी मणिपुर के राज परिवार से संबंधित थी। उसके परिवार में धार्मिक माहौल था। दादा और पिता महाराज भाग्यचंद्र कृष्ण के बहुत बड़े भक्त थे। अठारहवीं सदी में मणिपुर में वैष्णव परंपरा के प्रचार-प्रसार में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। उनके असर से बिंबावती भी कृष्ण की भक्ति रस का बचपन से ही पान करने लगी। जिस उम्र में बच्चे गुड्डे गुड़ियों से खेलते हैं उस समय में वह कृष्ण के लिए घंटों भक्ति गीत गाती और कृष्ण-कृष्ण कह कर रोती रहती थी। रात में गोविंदाजी मंदिर के द्वार बंद किए जाने के बाद भी चुपके से उसके अंदर चली जाती और वहां कृष्ण के सम्मोहन में उसे निहारती। उसे रोकने के लिए कई प्रयास किए गए। लेकिन कृष्ण के प्रति उसकी दीवानगी निरंतर बढ़ती ही गई। मीरा की तरह वह भी तीर्थ यात्रा पर गई। उसके साथ उसके पिता महाराज भागचंद भी गए थे। ऊंची ऊंची पहाड़ियों से होकर जाने वाली दुर्गम रास्ते में संचार के साधनों के अभाव के बीच उस समय वह यात्रा अत्यंत दुष्कर थी। अपने इष्ट के प्रति दीवानगी के कारण वह किसी तरह भ्रमण करते हुए नवद्वीप (पश्चिम बंगाल) पहुंची और वहां लंबे समय तक रही । नवद्वीप कृष्ण के बहुत बड़े भक्त चेतन महाप्रभु का जन्म स्थान भी रहा है और वैष्णव शास्त्रों में इसे अत्यंत महत्त्व दिया गया है। इसे गुप्त वृंदावन कहा गया है। वह अपने साथ कृष्ण की एक छोटी सी मूर्ति भी लाई थी जिसे अनुप्रभु नाम दिया गया।

नवद्वीप में भी वह हमेशा कृष्ण भाव में ही खोई रही। कभी-कभी कृष्ण को याद कर कर भावुक होकर इतनी जोर से रोने लगती की आसपास के लोग सोचते कि इसके किसी निकटतम रिश्तेदार की मृत्यु हो गई है। वहां पर कई चमत्कारिक घटनाएं हुई। अंततः वहीं राधा कुंड मे वह समाधि ले ली ।

बिंबावती की मातृभाषा मणिपुरी थी लेकिन उनकी रचनाओं पर बांग्ला भाषा का अत्यधिक असर है। वैसे उनकी रचनाओं में कई भाषाओं के असर और साधु परंपरा की स्पष्ट लक्षण दृष्टिगोचर होने के कारण उसे सधुक्करी भाषा कहा जा सकता है।

यह बहुत ही दुखद है कि उनकी मार्मिक और भावपूर्ण कई रचनाएं आज उपलब्ध नहीं है। वृहत के प्रति आकर्षण लिए इस तरह के मानव जीवन का सौभाग्य विरले लोगों को ही नसीब होता है। मणिपुर के इतिहास में वह हमेशा के लिए बहुत ही प्यार के साथ याद की जाती रहेगी।

नयाकिम गतवेच

इस कड़ी की दूसरी अमूल्य रत्न है **नयाकिम गतवेच** । व्यक्तित्व के श्रेष्ठता के कई पैमाने गढ़े गए हैं। इनमें एक पैमाना है-चमड़े का रंग। जिसमें गोरे लोगों को काले लोगों से अधिक श्रेष्ठ माना गया है। यह परंपरा कब से चली आ रही है कहा नहीं जा सकता है लेकिन एक सभ्यता के श्रेष्ठता बोध से दूसरी सभ्यताओं का काफी अधिक नुकसान और शोषण हुआ है। काले लोगों को जानवर की तरह माना जाता था। लेकिन उनमें भी जागृति आने पर अपने सम्मान और अधिकार के लिए आवाज उठाई गई है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर को कौन भूल सकता है ? उसी तरह रोसा पार्क भी एक बहादुर महिला थी जिसने बस में गोरे लोगों के लिए अपना सीट देने से मना कर दी। यह छोटी सी घटना साठ के दशक में एक बड़े आंदोलन का बीज साबित हुई जिसके परिणाम स्वरूप सिविल कानून बना और काले लोगों को बराबरी का अधिकार दिया गया।

लेकिन यहां पर मैं याद करना चाहूंगी दक्षिणी सूडान मूल की नयाकिम गतवे को। रंगो का खेल चेहरे तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि आम लोगों के दिल में भी उतर गया। काले लोग भी स्वीकार कर लिये कि गोरा रंग ही सुंदरता का पैमाना होता है। यह कहीं ना कहीं उन चलाक लोगों की चाल थी जो क्रीम, पाउडर और अन्य कई तरह के कॉस्मेटिक उत्पाद बाजार में खपाना चाहते थे। नयाकिम का जन्म अफ्रीका के शरणार्थी परिवार में हुआ था। बाद में उसके माता-पिता अमेरिका में बस गए। वह मॉडलिंग के क्षेत्र में आना चाहती थी। लोगों ने इसे पागलपन माना लेकिन वह अपनी बातों पर डटी रही। वह अपने चेहरा के रंगों में छेड़छाड़ करने तथा उसे ब्लीच करने के सुझाव को भी ठुकरा दी। आज वह अपने उसी काले रंग के साथ माडलिंग जगत की एक जानी-मानी हस्ती बन गई है। वह पत्र-पत्रिकाओं के अलावा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, एल्बम आदि में भी अपना पहचान स्थापित की है। अन्य गोरे मॉडलों या अभिनेत्रियों की तुलना में उसकी लोकप्रियता कहीं से भी कम नहीं है बल्कि वह अपने जैसे कई अफ्रीकी लड़कियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। यह दिखाता है कि सौंदर्य का अस्तित्व रंगो पर निर्भर नहीं है। यह दिखाता है कि व्यक्ति ठान ले तो स्थापित मानकों पर खरा उतरने के बजाय नया मानक गढ़ा जा सकता है।

तोसिको

इस कड़ी में मैं एक ऐसे विदेशी महिला का नाम लेना चाहूंगी जिसका योगदान भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अतुलनीय है। उसे हम लोगों के द्वारा इतना प्यार और सम्मान नहीं दिया जा सका जिसके वह हकदार थी। यह बात सर्वविदित है कि यूरोप के साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय में कई दूसरे देश के लोगों ने भी भारतीयों का साथ दिया। भारत के महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस की पत्नी भी उसमें से एक है। रासबिहारी बोस भारत के कई बड़े क्रांतिकारी आंदोलन के मास्टरमाइंड थे। अंग्रेजों से बचने के लिए जापान में जाकर शरण लिए थे। विदेशी धरती पर गुलाम देश की राजनीतिक भगोडे का रहना कितना कष्टप्रद है, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। उस परिवार ने बोस को अंडरग्राउंड रहने में काफी मदद की।

बोस के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर **तोसिको** उससे शादी कर ली। उसमें में अपने परंपरा के प्रति कट्टर जापानी परिवार की लड़की द्वारा किसी बाहरी पुरुष से शादी करना काफी साहस का कार्य था। लेकिन एक भारतीय धर्म पत्नी की तरह वह हर संकट में बोस का साथी दी। उस समय में वे दोनों होटल चलाते थे जिसमें लोगों को चावल और करी खिलाया जाता था। वह करी आज भी जापान में प्रचलित है जो रासबिहारी बोस के नाम से जाना जाता है। इन मुश्किल दौर में भी वे दोनों अपने मुश्किलों में उलझ कर शांत नहीं बैठे। बल्कि हर समय भारत की आजादी के लिए जी जान से लगे रहे। जगह-जगह जाकर एशियाई लोगों को अंग्रेजी अत्याचार से अवगत कराते रहे।
भारतीय मूल के लोगों को जमा कर एक संगठन बनाने के लिए प्रयास करते रहे। वे जापानी सरकार के बड़े अधिकारियों और मंत्रियों से मिलने के लिए पहुंचते रहे और उन्हें प्रभावित करने की कोशिश करते रहे।

भारत के वैसे लोग जो अंग्रेज की तरफ से जापानी के विरूद्ध लड़ते थे, उनके कैद होने पर उनके पास जाते और उन्हें अपने मातृभूमि के प्रति अपने दायित्व का एहसास कराते। इस तरह दोनों अपना संपूर्ण जीवन इस कार्य में लगा दिए। उनकी कठोर तपस्या के फलस्वरूप आजाद हिंद फौज का गठन संभव हो पाया। उस समय तक रासबिहारी बोस की उम्र काफी अधिक हो चुकी थी। इसलिए उन्होंने सर्वाधिक योग्य व्यक्ति सुभाष चंद्र बोस को उसका नेतृत्व करने के लिए आमंत्रित किए। आज भले हमारी नई पीढ़ी तोसाका का नाम नहीं जाने लेकिन भारत की आजादी में उसका योगदान अतुलनीय है। हम उसके त्याग और प्यार के लिए सदैव आभारी हैं।

इंदिरा हिंदुजा

बहुत सारी महिलाएं ऐसी भी है जिसमें अपने मेधा और ज्ञान से मानवता की सेवा की है। इसमें डॉक्टर **इंदिरा हिंदुजा** का नाम भी बहुत आदर के साथ लिया जाता है। वह मुंबई की एक प्रसिद्ध चिकित्सक वह वैज्ञानिक है। वह महिलाओं के बांझपन को दूर करने और विट्रो फर्टिलाइजेशन एंब्रियो ट्रांसफर के क्षेत्र में विशेषज्ञ है। वह भारत की उन गिने-चुने वैज्ञानिकों में से एक है जो टेस्ट ट्यूब बेबी के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण शोध कार्य की और अपने प्रयोग में सफल भी रही है। भारत में यह ऐसा क्षेत्र रहा है जिसे परंपरावादी लोग पसंद नहीं किए। साठ और सत्तर के दशक में जहां विकसित देशों में भी इस तरह की ज्यादा प्रयोग नहीं हो पा रहे थे, वहां पर सीमित संसाधनों और बिना किसी सरकारी प्रोत्साहन के इस तरह का कार्य करना काफी चुनौतीपूर्ण था। यह ऐसा दौर था जब हमारा समाज इस तरह के अविष्कारों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। डॉक्टर सुभाष मुखोपाध्याय जो बंगाल के इसी क्षेत्र के बहुत बड़े चिकित्सक और वैज्ञानिक थे, अपने खोज के कारण सामाजिक प्रताड़ना का सामना नहीं कर सके और आत्महत्या कर लिए। ऐसे दौर में इंदिरा हिंदुजा का योगदान बहुत ही साहस पूर्ण कार्य था। उसके प्रयास से हजारों बांझ महिलाएं लाभान्वित हुई। बाद में उन्हें भारत सरकार द्वारा पदम श्री पुरस्कार भी दिया गया। हमें उस पर गर्व है।

मैं प्रसिद्ध मराठी समाज सुधारक और कवयित्री **सावित्रीबाई फुले** से काफी प्रभावित रही हूं और चाहती हूं कि उसके योगदान के बारे में जिक्र कर सकूं। समाज के वंचित और गरीब औरतों के उत्थान के लिए उसके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। आज से लगभग डेढ़ सदी पूर्व महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। सावित्रीबाई ने अपने पति के साथ मिलकर कई विद्यालयों की स्थापना की। उस समय समाज का सोच यह था कि विद्यालय के लिए जाते वक्त छात्राओं और अध्यापिकाओं पर पत्थर, गोबर और गंदगी फेंका जाता था। लोगों को हजम ही नहीं हो रहा था कि इस तरह महिलाएं कैसे पढ़ सकती हैं और उनकी बराबरी कर सकती हैं।

सावित्रीबाई विद्यालय जाते वक्त एक साफ-सुथरी साड़ी अपने साथ रखती थी और जब उसकी साड़ी रास्ते में लोगों द्वारा फेंके जाने वाली गंदगी से गंदी हो जाती तो उसे बदलकर फिर पढाने के कार्य में लग जाती। बाल विवाह को रोकने के लिए भी उसे काफी संघर्ष करना पड़ा था। उस समय विधवाओं की स्थिति भी काफी खराब थी। उसे अपने समाज पर बहुत अफसोस होता है कि इस तरह के अमानवीय प्रथाओं को क्यों कर अपनाया गया। सावित्रीबाई ने उन सबों के हित के लिए कई प्रयास किए और उन्हें बराबरी का हक दिलाने के लिए आजीवन प्रयासरत रही। वास्तव में जब कोई सामाजिक परंपराएं हमारा दम घोटने लगे तो सड़ी-गली परंपरा को तोड़ना ही बेहतर है। इसके लिए जिस साहस की जरुरत होती है, वह सामान्य लोगों में नहीं मिलता। इसीलिए समाजिक नेतृत्व हर लोग नहीं कर सकते। सावित्रीबाई में इस तरह का नैतिक साहस प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है। अपने पति के निधन के बाद भी उसने परंपराप्रेमी लोगों के विरूद्ध जाकर अपने पति के चिता को मुखाग्नि दी और समाज में एक नई मिसाल कायम की। वर्तमान समय में फेमिनिज्म की समर्थक महिलाएं जो सिर्फ कागज और मीडिया में ही जुगाली करते दिख जाती हैं , उसे धरातल पर जाकर सावित्रीबाई फुले की तरह कार्य करने चाहिए।

मैं अपने इस निबंध के अंत में **फूलमती देवी** का जिक्र करना चाहूंगी। इसका नाम ज्यादा प्रसिद्ध नहीं है लेकिन काम हर भारतीयों को गौरवान्वित करने वाली है। एक नारी अपने संपूर्णता को तभी पाती है जब वह मां बन पाती है। हर मां के लिए उसके बच्चे उसे अत्यंत प्रिय होते हैं । मां की ममता का किसी भी अन्य दुनियावी प्यार से मुकाबला नहीं किया जा सकता है। यह ममता कभी-कभी इंसान की कमजोरी भी बन जाती है। लेकिन जो मां अपनी संतान को देश के लिए या किसी बड़े हित के लिए कुर्बान होने की प्रेरणा देती है, वह सचमुच प्रशंसनीय है। इस संबंध में भगत सिंह और उसकी मां विद्यावती का नाम काफी इज्जत से लिया जाता है। लेकिन मैं यहां पर महान क्रांतिकारी और शायर राम प्रसाद बिस्मिल की मां मूलमती देवी का जिक्र करना चाहूंगी। बिस्मिल का नाम काकोरी कांड और मैनपुरी षड्यंत्र मैं आया था। वे अपने गीत “ सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है “ की रचना के लिए जाने जाते हैं । उसकी मां हर समय राम प्रसाद बिस्मिल को महान कार्य की प्रेरणा दी। बिस्मिल को फांसी दिए जाने से पूर्व उसकी मां उससे मिलने आई थी। एक मां के लिए इससे अधिक कष्टकर और क्या हो सकता कि उसका बेटा कुछ पल का मेहमान है । दोनों मां-बेटे भावुक हो उठे। मां ने बेटे को शांत्वना दी और कहा कि उसे उस पर गर्व है। बिस्मिल के फांसी के बाद सांत्वना देने आए लोगों की भीड़ के सामने फूलमती देवी ने बड़ी निडरता के साथ कही कि मैं भारतीय संग्राम में अपने दूसरे बेटे को भी अर्पित कर रही हूं। धन्य है ऐसी माताएं।

न गोयद अज सरे बाजीचा हर्फे। कर्जा पन्दे नगीरद साहबे होश ॥

व गर सद बाबे हिकमत पेशे नादां। बख्बानन्द आयदश बाजीचह दरगोश ।।

अक्लमंद इंसान खेल खेल में भी अच्छी तालीम हासिल कर लेता है जबकि बेवकूफ अच्छी किताबों के सौ अध्याय पढने के बाद भी बेवकूफी ही सीखता है।

-शेख़ सादी

धरती और मानव

संजीव कुमार

मानव को नहीं भुलना चाहिये
कि उसके साथ साथ
जीव कई हजार लाख
रहते हैं इस धरती पर
ज्ञानहीन विवेकहीन
बस वृति पर निर्भर
लेकिन प्रकृति के साथ
रचे बसे है इस ढंग से
कि दुखता नही दिल धरती का
उसके जीवन मरण से
और मानव....
धरती को लहु लुहान किए है
प्रकृति को परेशान किए है
जिम्मेदारिया भुल कर
कि इसके सहोदर जीवों को
जरूरत है संरक्षक की
जो प्यार से उन्हे रखे
सहलाये, दुलारे
और कठिन क्षणों में उबारे
लेकिन उसके अपने
जाने किस नशा में
बेहताशा भाग रहा है
जाने किस भुख में
अपनों को निगल रहा है
जाने कब निंद की खुमारी मिटे
तिमिर की मोटी चादर फटे
टपके कहीं से प्रज्ञा बूंद मन में
सामुहिक दायित्व बोध जग सके

नागा समुदाय

अगुइ आर. नागा

भारत के उत्तर पूर्व के राज्यों में कई आदिवासी समुदाय के लोग रहते हैं। इसमें प्रमुख समुदाय है नागा।इसी समुदाय की बहुलता के आधार पर नागालैंड राज्य का गठन किया गया था। इस समुदाय के लोग गोरे, मजबूत कद काठी के, मांसल शरीर वाले और प्रकृति प्रेमी होते हैं।

नागा मणिपुर के जनसंख्या के लगभग एक चौथाई (सात लाख) है। नागालैंड में इसकी जनसंख्या सर्वाधिक (सत्रह लाख) है। अरुणाचल प्रदेश में दो लाख के आसपास तथा आसाम में लगभग पचास हजार है। भारत से बाहर इस समुदाय के लोग म्यांमार में भी मिलते हैं जहां वे सांगइन राज्य में एक मजबूत पकड़ बनाए हुए है और अपने लिए एक अलग स्वायत्त क्षेत्र बना लिए है। पहले अधिकांश नागा प्रकृति पूजक होते थे और अलग-अलग धार्मिक विश्वास का पालन करते थे। बीसवीं सदी में ईसाई मिशनरियों के सघन प्रचार से अधिकांश नागा ईसाई बन गए हैं और आधुनिक जीवन जीने लगे हैं। म्यांमार में कुछ बुद्धिस्ट नागा भी मिल जाएंगे।

नागा समुदाय में भी कई उप समुदाय है। अंगामी, आओ, चांग, चीर, चीरू, हतंगन, पुरूम, खइमनीउगन, लिंगामी, लोथा, माओ, मर्म, नेकटे, पोचरी, पोम, पोउमाई, रोंगमेइ, तंखुल, तारो, तुत्सा, टिखीर, वांचो, जेमे आदि कई प्रकार हैं। पुराने समय में अलग अलग समुदाय अलग-अलग बस्ती या पहाड़ में रहते थे और उनके बीच खूनी संघर्ष भी होता था। हरेक की अपनी अलग अलग भाषा और रीति रिवाज होती थी। अब यह मिलकर एक साथ रहते देखे जा सकते हैं। वैवाहिक संबंध को लेकर भी नागा लोगों में काफी उदारता है। कहीं-कहीं कुछ पुराने तरीके से विवाह के शगुन अपशगुन का विचार किया जाता है। अनावश्यक परिवारिक रोक-टोक देखने को नहीं मिलता है।

उत्तर पूर्वी क्षेत्र में इतनी अधिक भाषाएं हैं कि उसका सही ढंग से रिकार्ड रखना भी संभव नहीं है। भाषा वैज्ञानिकों के लिए यहां अपार संभावना है। सरकार को चाहिए कि उत्तर पूर्व के भाषाई संरक्षण और विलुप्त होते प्राचीन संस्कृति को संरक्षित करने के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास करने चाहिए। इन भाषाओं के संरक्षण के लिए एक अत्याधुनिक म्यूजियम बनाया जा सकता है जो विश्व में अपनी तरह का अनोखा होगा और पर्यटन के लिए बहुत बड़ा अवसर तैयार करेगा। उचित संरक्षण के अभाव में ये बीते कल की बातें हो जाएगी।

नागा लोग विकास की मुख्यधारा से लंबे समय तक कटे रहे। ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों जंगलों में निवास होने के कारण उसका जीवन अत्यंत मुश्किल रहा है। जानवरों के शिकार और मांस पर हुए भोजन के लिए निर्भर रहे हैं लेकिन अभी तेजी से इनका विकास हुआ है। यह अब पहाड़ी ढलान पर खेती भी करने लगे हैं जिसमें मुख्य रूप से दाल, तंबाकू, तेल, आलू आदि हैं। जंगली उत्पाद को भी बेच कर आय प्राप्त करते हैं। पर्यटन बढ़ने से भी बहुत लाभ हुआ है और ये लोग गाइड, ड्राइवर तथा होटल व्यवसाय से जुड़े हैं। नागा क्षेत्रों में कई आधुनिक विद्यालयों और कॉलेजों की स्थापना से ये लोग शिक्षा में काफी आगे जा रहे हैं। भारत के सबसे ऊंचे साक्षरता दर वाले राज्य में नागालैंड का भी नाम आना इसका प्रमाण है। शिक्षा का माध्यम इंग्लिश भाषा होता है। लेकिन अब हिंदी भी तेजी से सीख रहे हैं। नागा युवक युवतियां भारत के अन्य राज्यों की तरह ही काफी आधुनिक जीवन शैली अपना रहे हैं। उनके पोशाक और रहन सहन ही नहीं बल्कि चिंतन में भी काफी परिवर्तन हुए हैं। यह अतिथि सत्कार में भी बहुत अच्छे होते हैं।

नागा इलाकों में कई छोटे बड़े समूह हैं जो अपनी मांगों को लेकर हड़ताल बंद और सरकार के खिलाफ उग्र प्रदर्शन करते रहते हैं । कुछ समूह अपनी मांगों को लेकर सशस्त्र विरोध किए हैं जिससे यहां की व्यवस्था को काफी नुकसान पहुंचा है। लेकिन अब इसमें धीरे-धीरे सुधार हो रही है। बहादुर नागा युवकों का भारतीय सेना में भी काफी योगदान रहा है और वह अपने देश सेवा में किसी से पीछे भी नहीं रहे हैं।

पिछले कुछ सालों से नागालैंड की राजधानी कोहिमा में दिसंबर माह में होने वाले हॉर्नबिल त्यौहार में देशभर से लोग आ रहे हैं और उनके संस्कृति को नजदीक से देख पा रहे हैं। दस दिनों तक चलने वाले इस त्योहार में भिन्न-भिन्न नागा समुदाय के लोग अपने अपने गीत संगीत और संस्कृति का प्रदर्शन करते हैं।

भयजनित भक्ति कोई भक्ति नहीं है। वह मानसिक जड़ता की ही एक अवस्था है। कोई दोजख के भय से, कोई नरक के भय से परित्राण पाने के लिए ईश्वर से विनय करते हैं, इससे उनके सत्य ज्ञान का अभाव ही सूचित होता है। तुम लोग इस हीन मन्यता को प्रश्रय नहीं दो। ईश्वर को जो निजस्वरूप जैसा जानते हैं, उन लोगों को ईश्वर के प्रति भय रखने का कोई कारण ही नहीं हो सकता है। इसी भयशून्य ईश्वराभिमुखी गति को ही प्रेम करते हैं।

-श्री श्री आनंदमूर्ति

ङायोनबी: मछली वाली

वाई. सुरचंद्रा

मणिपुर की महिलाएं बहादुरी और अपने जिम्मेदारियों को निभाने के लिए जानी जाती हैं। अंग्रेजों के साथ हुए प्रसिद्ध नुपीलाल (नुपी-महिला, लाल-युद्ध) इसका प्रमाण है। बच्चों के देखभाल और रसोई घर के काम के अलावा उन्हें धान के खेत में पुरुषों के साथ काम करते हुए देखा जा सकता है। वस्तुत: पारंपरिक रूप से धान की रोपनी सिर्फ महिलाएं द्वारा ही की जाती थी। अपने लिए पहनने वाली सुंदर वस्तुएं, वस्त्र आदि भी महिलाओं द्वारा ही तैयार किए जाने की परंपरा रही है। मणिपुरी लोकगाथा खम्बाथोइबी में राजकुमारी थोइबी के द्वारा वस्त्र बुनने का जिक्र आता है। महिलाएं अपने उपयोग और बाजार में बेचने के लिए सब्जियों का उत्पादन भी करती देखी जा सकती हैं। जीविकोपार्जन के काम में महिलाएं शुरू से ही सक्रिय देखी गई हैं। इमा कैथल (मां का बाजार) इसका एक उदाहरण है जो यहां की महिलाओं के सशक्तिकरण का प्रतीक भी है। इन महिलाओं का मणिपुर के अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस कैथल में बहुत सारी महिलाएं अपने परिवार का एकमात्र कमाने वाली सदस्य होती है।

इन पारंपरिक व्यवसायों में, जो मुख्यतः अपने परिवार को सहारा प्रदान करने के लिए शुरू किया गया था, मछली का व्यवसाय महत्वपूर्ण है। यह राजधानी में स्थित ख्वाइरमबंद बाजार में किया जाता है । वस्तुतः यह बाजार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मुख्य आधार प्रदान करता है।

इन मछली बेचने वाली महिलाओं के लिए मणिपुरी में **ङायोनबी** शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है मछली बेचने वाली विवाहित महिला या माताएं । यह प्रायः ग्रामीण क्षेत्र की होती है जो बाजार में अपना सामान बेचने आती है। इस व्यवसाय की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता मछली ढोने वाली टोकरी या बर्तन है जिसे **ङारुबाक** कहते हैं। यह बांस का बना होता है । इसकी बनावट इसे अद्भुत बनाता है जिसे सर पर ढोया जाता है।

ङायोनबी का पुराना नाम **वाइथाउ सगोल** भी काफी रोचक और मजेदार है । थोबाल जिला में स्थित एक झील का नाम है वाइथाउ। मणिपुरी में सगोल का अर्थ घोड़ा होता है जो गति का प्रतीक है। यह नाम इसलिए प्रदान किया गया क्योंकि थोबाल स्थित वाइथाउ झील से सुबह में मछली निकालने के बाद उसके विक्रेता काफी तेजी से दौड़ते हुए बाजार जाते थे जिससे सही समय पर इस को बेचा जा सके।

मणिपुर में सुंदर झील और तालाब की अधिकता है। कई मछली पालन केंद्र, झील, नदी आदि से खपत के लिए मछली प्राप्त की जाती है। मणिपुर के घाटी में लगभग सभी जगह मछली पालन का काम किया जाता है। विश्व प्रसिद्ध लोकतक झील, जो उत्तर पूर्व भारत का सबसे बड़ा मीठे पानी का झील है, से भी कई तरह की मछलियों का उत्पादन किया जाता है। थोबाल जिला में भी कई जगह मछली पालन किया जाता है। मयांग-इम्फाल के आसपास भी मछली पालन होता है। मणिपुर के पहाड़ी क्षेत्रों में मछली पालन किया जाता है जो अपेक्षाकृत काफी कम है।

मछली के व्यवसाय करने वाली महिलाओं का दिनचर्या काफी कठिन होता है। वह मछली पकड़ने के लिए सुबह-सुबह फार्म में चले जाते हैं जहां मेहनत और होशियारी से मछली पकड़ा जाता है। प्राय: मछली पकडने वाले लोगों का अपना तालाब या जलक्षेत्र नहीं होता है, इसलिए उसके मालिक को भुगतान किया जाता है। उसके बाद वे अपने घर चली जाती है जहां स्नान और भोजन करती है।

काम ज्यादा होने पर अपने भोजन को भी छोड़ देती है और घरेलू काम से फुर्सत लेकर बाजार मछली बेचने जाती है। ये लोग पहले लंबी-लंबी दूरी समूह में पैदल तय करती थी। बात करते-करते बाजार तक की दूरी तय हो जाती थी। आज के समय में टाटा मैजिक या ओटो आदि से बाजार जाती है।

प्राचीन समय से हीं मछली मणिपुर का एक महत्वपूर्ण खाद्य रहा है। ङायोनबी इसमें महात्वपुर्ण भूमिका निभाती हैं। दूर-दूर से मछली प्राप्त करती हैं और उसे बेचतीं हैं। इस तरह से वे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है और अपने परिवार के लिए भोजन, वस्त्र, चिकित्सा, शिक्षा जैसे आधारभूत जरूरत को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । उसका जीवन इतना भी आसान नहीं होता है बल्कि अपने कार्य को पुर्ण करने के चक्कर में कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है।

समस्याओं के स्वरूप में कई परिवर्तन होते रहते हैं। पुराने समय में यातायात के साधनों के अभाव के कारण उसका श्रम अत्यधिक होता था। वर्तमान समय में यातायात और संचार के साधनों का विकास हुआ है लेकिन अब इस क्षेत्र में अलग समस्याएं हैं । इस व्यवसाय में अधिक से अधिक महिलाओं के आने कारण लाभ का अंश बहुत कम हो गया है। कभी-कभी तो प्राप्त लाभ से अधिक किराया का भुगतान करना पड़ जाता है।

मणिपुर अभी भी कई तरह के सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं से जूझ रहा है। बंद, हड़ताल या जाम के कारण समाज भी बुरी तरह प्रभावित होता है । इससे जीविकोपार्जन के लिए महिलाओं को भी काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बाजार में भी महिलाओं को कई तरह की दिक्कतें होती हैं। उसके लिए पर्याप्त जगह भी नहीं होता है कि वह अपना ढंग से दुकान खोल सके। पहले से स्थापित दुकानदार उसे पसंद नहीं करते हैं । महिलाएं फुटपाथ पर किसी तरह सामान बेचती है। उनके लिए साफ-सुथरे शौचालय की व्यवस्था नहीं रहती है। कभी-कभी अतिक्रमण हटाने के नाम पर उसके सामानों को फेक दिया जाता है और उसे व्यापार करने से रोका जाता है । इससे उसका जीवन और अधिक संघर्षपूर्ण बना गया है। उस अवस्था में असहाय पूर्वक चीखते-चिल्लाते देखना दुखद होता है । ये महिलाएं अन्य समस्याओं जैसे गोली चलने, बम ब्लास्ट आदि का भी आसानी से शिकार हो जाती हैं।

इन महिलाओं का जीवन पूरी तरह के मछली के व्यापार पर निर्भर होता है। इसलिए अपने द्वारा लाए गए सौदे को बेचना भी इसके लिए अत्यंत जरुरी होता है। अन्यथा व्यापार में होने वाले नुकसान से उनकी स्थिति बुरी तरह प्रभावित होती है। जब यह देर रात में अपने घर लौटती है तो बिना बिके हुए मछली को यह आग में सेकती है ताकि जल्दी खराब ना हो जाए, क्योंकि यही इसके आय का मुख्य साधन है। इस तरह इसके रोजमर्रा का जीवन अत्यंत व्यस्त होता है। बाजार से महिलाएं लौटते वक्त अपने घर के लिए अन्य जरूरी सामान लाती हैं, जिसमें छोटे-मोटे घरेलु सामान या खाद्य वस्तुओं होती हैं। ये महिलाएं दिन भर अपने काम के कारण घर से दूर रहती है इस तरह अपने बच्चों के लिए सही समय नहीं दे पाती है। इसका कहीं ना कहीं से बच्चों के पालन पोषण पर नकारात्मक असर पड़ता है।

मणिपुर में मनाए जाने वाले पर्व निंगोल चकौबा के समय में मछलियों का बिक्री बढ़ जाता है । यह मछली बेचने वाली महिलाओं के लिए काफी सुखद होता है।

अपने बच्चों के लिए जरूरी सामान खरीदी पाती है। वह छोटी मोटी इच्छाएं जिसके लिए महीनों इंतजार करती हैं, इस समय में वो पूर्ण हो पाती हैं।

मणिपुर के राजनीतिक और आर्थिक स्थिति में जल्द से जल्द सुधार की जरूरत है, जिससे यहां के लोगों के जीवन में सुधार हो सके और इस तरह से इन मछली बेचने वाली महिलाओं का जीवन स्तर भी सुधर सकेगा। पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में भी जिस तरह से यह संघर्ष करते हुए अपने गरिमा और सम्मान की रक्षा कर रही है, यह अत्यंत प्रशंसनीय और प्रेरणाप्रद है। सरकार का दायित्व है कि योजना बनाकर इन समस्याओं का स्थायी निदान करे। रोजगार के संसाधनों के विकास से मछली व्यवसाय पर बढ़ते लोगों का बोझ कम हो सकेगा और लोग रोजगार के नए साधनों की ओर मुड़ेंगे। अंततः हमें खुशहाल मणिपुर बनाना है जो हंसते-मुस्कुराते लोगों से ही बनेगा।

अपने शब्दों को ऊंचा उठायें, आवाज को नहीं,

फूल बारिश से बढते है,गड़गड़ाहट से नहीं ।

- रूमी

बचपन की यादें

चंद्रमुखी कुमारी

फूलों सा जीवन, मेरा कोमल बचपन
सहेजे हुई हूँ यादों के सहारे |
वो दादी की लोरी, वो लड़ना झगड़ना
कहानियों में खोकर सपने सजाना
कहां खो गए राजा रानी हमारे ?
सहेजे हुई हूँ यादों के सहारे ।

अध्ययन, गुरुवंदन
त्योहरों के उल्लास उमंग
हर दिन कितने प्यारे होते
रंग बिरंग मचे हुडदंग
वो रंगीन अतित के पन्ने
जी उठते हैं मन में हमारे ।
सहेजे हुई हूँ यादों के सहारे ।

हम बड़े हुए, हम बिछड़ गए
जीवन के दौर में बिखर गए
कुछ बसे परदेस जाकर
कुछ घर में हीं उलझ गए
पर मन उलझा उसी अतीत में
जीवन के स्वर्णकाल हमारे ।
सहेजे हुई हूँ यादों के सहारे ।

व्याकुल चकोर भी जाने कि
आए न जमीं पर चांद कभी
पागल मन मेरा जाने यह
पीछे ना जाए समय कभी
मेरा चेतन, मेरी कल्पना
क्यों उड़ती पीछे पंख पसारे|
सहेजे हुई हूँ यादों के सहारे ।

दंड विधान

योगेश कुमार यादव

कहते हैं दंड विधान किसी व्यवस्था को चलाने के लिए आवश्यक होता है। शासन के हर स्तर पर चाहे वह राष्ट्र हो, कोई राज्य हो, ग्राम पंचायत स्तर की छोटी व्यवस्था हो या परिवार हो, शासन चलाने के लिए हर जगह दंड विधान का प्रावधान होता है। यहां तक कि महान लोग आत्मानुशासन के लिए स्वयं के लिए भी दंड विधान निर्धारित करते हैं। यह विचारणीय प्रश्न है कि दंड की आवश्यकता क्यों होती है। दंड विधान में किस हद तक कठोरता या उदारता होनी चाहिए।

हम जानते हैं कि कोई व्यवस्था नियम से ही चल सकती है। प्रकृति भी नियम का पालन कर रही है। सूरज चांद तारे सभी नियम से अपने पथ पर चल रहे हैं जिसके नियम उल्लंघन करने पर सारी सृष्टि खत्म हो सकती है। दिन रात नियम से होता है। छोटे से छोटे कण भी प्रकृति के नियम के अनुसार काम करता है। उसी तरह मनुष्य जीवन में भी अनुशासन की आवश्यकता होती है। अनुशासन हीन व्यक्ति जीवन में ज्यादा उन्नति नहीं कर सकता है। जब हम सामाजिक जीवन में आते हैं तो हमें अनुशासन की और अधिक आवश्यकता होती है। अनुशासन के अभाव में एक व्यक्ति की असीमित स्वतंत्रता दूसरे व्यक्ति के विकास को बाधित कर सकती है और संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर सकती है। इसलिए हमें अपने समाज के लिए दंड विधान की भी आवश्यकता महसूस होती है। वस्तुतः सामाजिक व्यवस्था में दंड का प्रावधान उन लोगों को सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत लाने के लिए बाध्य करता है जो व्यक्ति अपने चिंतन और अपने कार्य पर नियंत्रण नहीं रख पाने के कारण समाज के लिए समस्या उत्पन्न करने लगता है। कानून भी भय दिखाकर व्यक्ति को एक व्यवस्था के अंतर्गत रखने की कोशिश करता है जिससे कोई एक दूसरे के लिए समस्या उत्पन्न ना करे और सभी को सर्वांगीण विकास का भरपूर मौका मिल सके।

किसी-किसी सभ्यता में दंड विधान अत्यंत कठोर देखा गया है जहां छोटी-छोटी गलती पर भी काफी कठोर सजा दी जाती है। अपराधियों को मौत की सजा देना या अपंग कर दिया जाना सामान्य बात मानी जाती है। लेकिन धीरे-धीरे बौद्धिकता के विकास से यह महसूस हुई कि इस तरह का दंड विधान एक बर्बरता पूर्ण सोच है जिसे प्रयोग से हटाया जाना चाहिए। दंड देने का उद्देश हमेशा अपराधियों में अपराध वृत्ति की समाप्ति करनी है ना कि अपराधियों की समाप्ति करनी। किसी व्यक्ति के अपराध के पीछे उसका व्यक्तिगत प्रयास ही नहीं बल्कि सामाजिक परिवेश और परिस्थिति भी उसके लिए जिम्मेदार होती है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए सही परिस्थिति उत्पन्न कराना समाज की भी जिम्मेदारी है और समाज को यह बात स्वीकार करनी चाहिए। इसके लिए समाज को अत्यधिक प्रगतिशील, संवेदनशील और उच्च बौद्धिक स्तर का होना होगा। व्यक्ति को उसके अपराध के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार मान कर और उसे दंड देकर समाज और राज्य के कर्तव्य की समाप्ति नहीं मान सकते हैं।

दंड का विधान करते वक्त हमेशा इस बात को ध्यान में रखनी चाहिए कि इसका उद्देश्य अपराधी को प्रताड़ित करना उसके मन में हिन भावना जगाना नहीं है। इसका अंतिम उद्देश्य है -अपराधी में सुधार लाना है। प्राचीन विद्वान जनों ने विधि विषयों पर चिंतन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि अगर कोई व्यक्ति या व्यवस्था किसी का पालन करने में सक्षम नहीं है, उसे प्यार नहीं करता है तो उसे दंड देने का भी अधिकार नहीं है।

हम किसी को उसी हद तक दंड दे सकते हैं जिस हद तक हम उसके प्रति मंगल कामना रखते हैं। अन्यथा यह दंड व्यवस्था अपने महान उद्देश्य को को बैठेगी और ताकतवर द्वारा कमजोर को या संस्था द्वारा व्यक्ति को सताने की एक घटिया किस्म का, बदले की भावना वाली उपकरण बन जाएगी। अगर कभी किसी गंभीर अपराध के वक्त कठोरता को अपनाना ही पड़े तो भी इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए यथोचित उपाय किए जाए।

सभी समाज का कर्तव्य होता है कि वह अपने प्रत्येक व्यक्ति को सभी तरह के विकास का अवसर उपलब्ध कराए। हो सकता है सुंदर परिस्थिति और सही ज्ञान मिलने पर बड़ा से बड़ा अपराधी भी सही रास्ते पर आ जाए। इस तरह की कई प्रयोग अतीत में भी देखे गए हैं। सक्षम लोग बड़े से बड़े अपराध मानसिकता वाले लोगों को भी समाज के लिए उपयोगी बनाए हैं। अतः हमें हर संभव कोशिश करनी चाहिए कि हम किसी को भी अंधकार के गर्त में जाने से रोकें। आज हमारे समाज में जिस तरह की जेल व्यवस्था या वातावरण है वह अपराधियों को और अधिक शातिर बनाती है। किरण बेदी द्वारा तिहाड़ जेल में किए गए सुधार कार्य एक सुंदर उदाहरण है। ‘दो आंखें बारह हाथ’ फिल्म में कैदियों के लिए किए गए सुधार कार्य मात्र कोरी कल्पना नहीं बल्कि हकीकत में भी संभव है।
आज संपूर्ण विश्व में मृत्युदंड पर बहस छिड़ी हुई है। कई राष्ट्र अपने दंड विधान से मृत्यु दंड को खत्म कर दिये हैं। कई राष्ट्र इसे अत्यधिक जघन्य मामले में हीं लागू करते हैं। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ नियम-कानून में काफी सुधार हुए हैं। हर व्यवस्था में यह ध्यान रखा जाता है कि दंड व्यवस्था हमारी तत्कालीन व्यवस्था की अनुरूप हो। यह भी ध्यान दिया जाता है कि दंड विधान मानवीय हो और एक व्यक्ति की सजा से उसके परिवार, आश्रितों को ज्यादा नुकसान नहीं हो।

व्यक्तिगत जीवन में भी दंड विधान आवश्यक माना गया है। इससे हमारा अवचेतन मन किसी चीज को स्वीकार करने के लिए प्रेरित होता है तथा किसी बुरे चीज को त्यागने के लिए तैयार होता है । जिसका असर हमारे चेतना, संपूर्ण शरीर और संपूर्ण व्यक्तित्व पर पड़ता है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति प्रतिदिन सुबह में भ्रमण का अभ्यस्त है। अगर किसी कारणवश वह एक दिन इसके लिए नहीं जाता है, फिर दूसरे दिन नहीं जाता है तो उसे धीरे धीरे भ्रमण पर नहीं जाने की आदत लग जाएगी। लेकिन अगर वह पहले ही दिन भ्रमण पर हम पर नहीं जा पाने के कारण दंड स्वरूप उस दिन सुबह के नाश्ते का त्याग कर देता है तो उसका शरीर और मन अगले दिन भ्रमण पर जाने के लिए तैयार रहेगा एवं वह अपने अच्छा आदत को बनाए रख पाएगा। इसी तरह हल्का हल्का दंड विधान जैसे मौन रखना, अल्प भोजन करना, कुछ देर दौड़ना, कुछ अधिक साधना करना या अपना भोजन दूसरे को दान कर देना आदि से व्यक्ति का मन मजबूत होगा और दंड से उसमें सुधार ही होगी। इस संदर्भ में यह भी ध्यान रखना होगा कि दंड कभी भी उस सीमा तक नहीं पहुंचे जिससे शरीर को किसी तरह का स्थाई नुकसान हो। मानव शरीर इस दुनिया का सबसे बड़ा, सबसे विकसित उपकरण है जिससे अपार कार्य की संभावना और आशा है। इसलिए इसे किसी भी कीमत पर नुकसान नहीं पहुंचाया जाना चाहिए।

मानव सभ्यता का विकास

सदानंद यादव

मानव सभ्यता के विकास पर अनेक विद्वानों ने प्रकाश निक्षेपण किए हैं। वर्तमान काल के विश्व विख्यात दार्शनिक श्री पी.आर. सरकार अपने सामाजिक अर्थ नैतिक दर्शन प्रउत सिद्धांत के परिपेक्ष में मानव सभ्यता के क्रमिक विकास का विस्तार से चर्चा किए हैं। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की है कि आज मानव सभ्यता उस शीर्ष बिंदु पर पहुंच चुका है जहां एक विश्व सरकार की आवश्यकता है । प्रागैतिहासिक काल से चलकर मनुष्य आज उस मुकाम पर पहुंच गया जहां बौद्धिकता इतनी तेजी से बढ़ी है जितना विगत दस हजार वर्षों में भी नहीं बढी। मनुष्य इस पृथ्वी पर लगभग दस लाख वर्ष पूर्व आया था। इन वर्षों में मनुष्य पंचभौतिक जगत में तथा मानसिक जगत में अद्वितीय उन्नति किया है। मनुष्य का विकास तीन स्तरों में होता है- पहला उसके स्थूल शरीर में, दूसरा उसके मानस शरीर में तथा तीसरा है उसका आत्मिक विकास। मानव सभ्यता का विकास आज तीनों स्तर में हुआ है। हालांकि विद्वानों द्वारा आत्मिक उन्नति हीं वास्तविक उन्नति माना जाता है। विकास का क्रम चलता रहा है और चलता ही रहेगा क्योंकि चलना हीं इस जगत का लक्षण है। रुकना इसका स्वभाव नहीं है।

मनुष्य इस सृष्टि के उषाकाल से चल रहा है। उसके विकास के पथ में अनेक बाधा विपत्तियां आयीं है। मानवता के विकास में अनेक उन्नति और अवनति हई है। वर्षों पहले के प्रागैतिहासिक मनुष्य की शारीरिक संरचना और आज के मनुष्य की शारीरिक संरचना में बहुत अंतर है। उस काल के मनुष्य का क्रेनियम छोटा था। सिर का कपाल बड़ा था। हाथ आदि अधिक लंबे थे। लिंफेटिक ग्लेंड आदि अधिक सक्रिय थे। मनुष्य बंदर की तरह उछल कूद कर सकता था। वृक्ष की एक डाली से दूसरी डाली पर आसानी से चला जाता था। उस काल में मनुष्य अन्य जीव जैसे बंदर जातीय जीव समूह जैसे आचरण करता था। भिन्नता बहुत कम थी। मनुष्य वानर गोष्ठी का सदस्य है। उस गोष्ठी के अन्य सदस्य जैसे चिंपैंजी, गोरिल्ला, लंगूर, ,बनमानुस इत्यादि के पंच भौतिक जगत में उन्नति बहुत कम हुई परंतु मनुष्य की अधिक हुई है। मनुष्य की आकृति में भी आश्चर्यजनक बदलाव हुए हैं। यह परिवर्तन उसके संघर्ष और समन्वय के कारण ही हुआ है। मनुष्य के स्नायु कोष एवं स्नायु तंतु के विस्तार एवं उन्नति की जितनी संभावना है उतनी अन्य गोष्ठी में नहीं थी। इसलिए उसका विकास नहीं हो सका और मनुष्य अपने सभ्यता में आगे बढ़ गया। मनुष्य प्रारंभ में निरापद आश्रय के लिए गोरिला, बनमानुष आदि के तरह वृक्षों और पहाड़ों पर रहता था। अधिक दिनों तक पहाड़ों पर ही निवास करता रहा। उसके बाद संघर्ष और समन्वय की सहायता से जंगलों से होते हुए नदी के किनारे और तराई में आकर बसा। यही मानव सभ्यता का प्राचीनतम दिग्दर्शन है ।

इसका अनेक प्रत्यक्ष प्रमाण है। आधुनिक काल का ‘गोत्र’ शब्द इसी प्राचीनतम व्यवस्था का प्रमाण है। यह पहाड़ का ही सूचक है। प्राचीन संस्कृत में पहाड़ को गोत्र कहा जाता था। उस समय में अलग-अलग

पहाड़ों पर अलग-अलग मानव गोष्ठी रहती थी । उनके सरदारों के नाम से पहाड़ का नाम जाना जाता था। उन पहाड़ों पर रहने वाले वसिंदे उसी पहाड़(गोत्र) के नाम से अपना परिचय देते थे। उस समय में वैवाहिक प्रथा प्रचलन में नहीं थी। मातृगत कुल व्यवस्था का ही प्रमाण मिलता है। पिता का कोई परिचय नहीं था। आज भी दुनिया के कई हिस्सों में मातृगत व्यवस्था है। भारत के मेघालय में भी यह प्रथा देखी जा सकती है। इसी प्रकार मानव सभ्यता आगे बढ़ता गया।

प्रागैतिहासिक काल में जीवन संघर्ष मय था। एक गोत्र अर्थात एक पहाड के वासियों का दूसरे पर्वत के वासियों के बीच दिन-रात संघर्ष, छीना झपटी होते रहता था। इस लिए एक पहाड़ के सभी निवासी एक भावना से प्रेरित होकर रहते थे। इसलिए अन्य पहाड़ के नारियों के साथ वैवाहिक संबंध करता था। अर्थात भिन्न गोत्र के नारी को जीतकर या अपहरण कर ले आता था। पराजित पक्ष के नारी को बांधकर लाया जाता था। उसे कड़ी में बांधा जाता था जिसका आज परिमार्जित रूप विवाह में वर वधू के वस्त्रों से गठबंधन होता है। आज के औरतों में हाथ की चुडी उसी आदिम युग के हथकड़ी का परिमार्जित रूप है । उस छि**ना** झपटी में औरतों का सर फूट जाता था । आज का सिंदुर प्रथा उसी खून का प्रतीक है। अभी भी बंगाल में कुछ जगह लोहे की चुड़ी पहनने की प्रथा है।

इस प्रकार आदिम जीवन से सभ्यता का क्रमश: विकास हुआ है। गोष्ठी में माता प्रधान होती थी । परवर्ती काल में यह व्यवस्था परिवर्तित होकर पिता परिवार के मुखिया हुए और गोत्र अधिपति के रुप में स्थान ग्रहण किए। सभ्यता स्नेः- स्नेः संघर्ष के बीच से आगे बढ़ती गई।

युद्ध और संघर्ष मानवीय स्वभाव में होने के कारण अनेक युद्ध उपकरण का भी मानव सभ्यता के साथ साथ विकास होता गया है। मनुष्य का एक गोत्र जब पहले पत्थर से, जंगलों के झाडी से लड़ाई करता था तो दूसरा गोत्र विजित होने के लिए अन्य औजार का विकास कर लिया ताकि विजीत हो सके। मानव सभ्यता का आधुनिक युग में शास्त्रों का अविष्कार आज भी उसी का प्रमाण है।

जैसे जैसे मनुष्य का स्नायु कोष उन्नत होता गया, उसका गंभीर चिंतन भी बढता गया । आदिम व्यक्ति चित्र बनाना प्रारंभ किया और उसी से तय चिंतन के आधार पर लिपि का उद्भव हो गया। चित्र को देखकर अक्षर का नमूना बनाने लगा। चीन में चित्र लिपि आज उसका प्रमाण है। इस जीवन के अनेक क्षेत्र में संघर्ष चलता रहा है । उसी क्रम में पशु पर भी विजय पाया है। आपसी संघर्ष में जो कमजोर था, वह हार गया या अधोगति प्राप्त छोटी जाति में गिनती होने लगा और जो बुद्धिमान या बलशाली था वह ऊंची जाति में गिना जाने लगा। अर्थात बुद्धि की लड़ाई प्रारंभ हो गई।

मनुष्य की अग्रगति स्थूल जगत में भी हुई। उसने ठंड से बचने के लिए कपड़ों, पोशाकों को पहनना शुरू किया। वस्त्र का व्यवहार प्रारंभ हो गया। प्रारंभ में वृक्षों के पत्तों आदि को दूब या घास से सिलाई कर पहनता था। बाद में कच्चे रेशे का अविष्कार कर वस्त्र बनाना सीख लिया। इसी क्रम में शीघ्रता से जाने के लिए चक्का का आविष्कार कर लिया। जिस दिन चक्के का आविष्कार हुआ उस दिन मानवत सभ्यता के नए युग का सूत्रपात हुआ। इसके बाद यहां के लोग बैलगाड़ी भी बनाए और मानव सभ्यता की नई गाथा लिखी गई।

इस प्रगति काल में आते-आते मनुष्य के मस्तिष्क का क्रेनियम बड़ा होता गया किंतु सर की खोपड़ी का आकार छोटा हो गया। हाथ की लंबाई धीरे-धीरे कम हो गई ।

जबड़े थौड़े ऊंचे हो गए। इस पृथ्वी के विभिन्न भाग में यह शारीरिक परिवर्तन स्थानगत प्रभाव के कारण भिन्न-भिन्न रूपों में हुआ। जिसका प्रभाव भाषा, शारीरिक रुप पर भी पड़ा ।

यहां उल्लेखनीय है कि ये सारे परिवर्तन स्नायु तंतु एवं स्नायु कोष के परिवर्तन के कारण ही हो पाया है। यह परिवर्तन मनुष्य के चिंतन प्रक्रिया को प्रभावित करते आया है। मन की यह अभिव्यक्ति धीरे-धीरे मनुष्य को सभ्यता के दौर में आज कहां से कहां ले आया है। मनुष्य का जीवन चक्र हीं बदल गया है।

मनुष्य आगे की ओर चला। मनुष्य स्थूल जगत और विज्ञान में अविष्कार किया । उसी तरह मानस जगत में भी उसने दर्शन का, आध्यात्मिकता का आविष्कार किया है। इसी क्रम में आज से लगभग सात हजार वर्ष पहले शिव आए । उन्होंने मनुष्य के सभी प्रतिष्ठानों प्रचेष्टाओं, प्रयासों को व्यवस्थित किया तथा उसको एक विशेष सूत्र में निबंध कर सभ्यता का नया इतिहास लिख दिया। इसके फलस्वरूप ,चिकित्सा, आयुर्वेद, नृत्य और गीत, सब को एक नया रूप मिला ।

सभ्यता के विकास में भगवान शिव के बाद श्री कृष्ण आए। उन्होंने मनुष्य जाति को सुसंगठित करने का प्रयास किया । मानव समाज को एक नया आयाम प्रदान किए। मानवता को नया प्रकाश मिल गया । उस समय मानव मनीषा काफी विकसित हो चुकी थी। उन्होंने लोगों को दर्शन का ज्ञान दिए और व्यवस्तित सामाजिक ढांचा तैयार किए।

मानव सभ्यता के विकास के दौर में मनुष्य को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, आध्यात्मिक जगत में आगे चलने में, विज्ञान के क्षेत्र में आगे चलने में जिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, आज सारी बाधा और विपत्तियां कम हो गई है। मुनि वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि के पहले जितना कष्टकर पथ था, आज उतना कष्ट नहीं उठाना पड़ता है। आज का मनुष्य साधना करने के लिए जंगलों में, पहाड़ों में नहीं जाता है। वह आज समझ गया है कि यह मानव शरीर मानवता की सेवा के लिए मिला है, जीवों की कल्याण के लिए मिला है।

इस प्रकार मनुष्य और आगे जाएगा। अध्यात्मिकता उन्नति के साथ-साथ जागतिक उन्नति करेगा परंतु सामाजिक कल्याण को ध्यान में रखकर करेगा । जो मानव सभ्यता को अध्यात्म के शिखर पर आगे ले जाएगा वह सदविप्र होगा। मानव सभ्यता के विकास के जो बाधक होंगे वही राक्षस होगा, वही दस्यु होगा, वही शैतान होगा। इसलिए मानवता को बचाने के लिए सदविप्र का सहयोग आवश्यक है। मनुष्य के चलने का कोई अंत नहीं है। इस विकास के क्रम में अगर यह धरती इंसानों के रहने लायक नहिं रहेगी उस दिन मानव मनीषा किसी अन्य ग्रह पर अपना निवास ढूंढ लेगी। इस तरह से मानव सभ्यता का विकास अनवरत रूप से चलता रहेगा ।

त्याग का फल

सोराइसम विद्यालक्ष्मी देवी

कई सदी पहले की बात है। लोकतक के किनारे एक बहुत ही मेहनती लड़का रहता था। उसका नाम था वरुण। वरुण का दुनिया में कोई नहीं था उसके परिवार के सारे सदस्य किसी बीमारी में मारे गए थे। वह दिन भर मछली पकड़ता, शिकार करता और पहाड़ी पर बैठकर गीत गाता था। शाम में थक हार कर अपनी झोपड़ी में आता और भगवान को याद कर सो जाता था। उसे कभी-कभी अकेलापन महसूस होता तो घूमने के लिए आसपास के इलाके में चला जाता था। बहुत दूर एक राजा का घर था। एक दिन वरुण घूमते घूमते राजा के महल के पास से गुजरा। महल की सुंदरता देखकर वरुण के मन में हुआ कि वह भी अंदर जाकर उसे देखे लेकिन पहरेदार ने उसे दूर से ही भगा दिया। वह उदास होकर वापस घर लौट गया। कई दिन बीत गए। वह इन बातों को भूल गया।

एक बार वरुण को कई दिनों तक खाने के लिए कुछ नहीं मिला। आसपास कोई फल फुल भी नहीं था और कोई शिकार भी नहीं मिल पाया। यह दिन अचानक उसे एक हंस पक्षी मिला। वह धरती पर गिर कर तड़प रहा था। शायद किसी ने उसे पत्थर से मारा। उसका पंख लहूलुहान था। वरुण ने भी कई पक्षों के शिकार किए थे लेकिन उसने आज तक इस तरह का पक्षी नहीं देखा था। शायद यह कोई दूर देश का पक्षी होगा जो इस इलाके होकर गुजर रहा था। पक्षी की दशा देखकर उसे दया आ गई। पक्षी की आंखों में उसे विवशता नजर आई। वह उसे उठाकर घर ले गया और जंगली जड़ी बूटी की लेप लगाकर उसकी सेवा की। धीरे धीरे हंस ठीक हो गया और वहां से उड़ गया।

उसी रात वरुण को स्वप्न में वही पक्षी दिखा । उसने कहा कि तुमने मेरी जान बचाई है। मैं बदले में तुम्हें यह दस बीज दे रहा हूं। प्रत्येक बीज से एक वृक्ष बनेगा। अगर इस फल को लगाने वाला दूसरों की भलाई और सेवा करेगा तो फल लाल-लाल,काफी मीठे और स्वादिष्ट होंगे। अगर इसे लगाने वाले के मन में लालच होगा तो फल खट्टे और कड़वे हो जाएंगे और पेड़ जल्दी सूख जाएगा।

सुबह उठकर वरुण ने देखा कि उसके आंगन में दस चमकदार, छोटे-छोटे बीज रखे हुए हैं। उसे बहुत आश्चर्य हुआ। उसने आंगन में ही एक जगह साफ सुथरा करके एक बीज लगा दिया और अपने रोज के काम पर चला गया। अगले दिन नींद टूटने पर उसने देखा कि आंगन में एक बड़ा सा पेड़ लगा हुआ है और उसमें कुछ लाल-लाल फल लगे हुए हैं। फल बहुत ही सुंदर था। उसके आश्चर्य की सीमा न रही। वह जल्दी से पेड़ पर चढ़ गया और एक फल तोड़कर खाया। फल अत्यंत स्वादिष्ट था। वह कुछ और फल खाया और उसका पेट भर गया। उस दिन बाद शिकार पर नहीं गया और दिन भर खेत में काम करता रहा । अगले दिन उसने देखा कि पेड़ पर फिर कुछ नए फल लगे हैं। उसे रोज कुछ नए फुल मिल जाते और उसे खाने पीने की चिंता नहीं रही। चिड़िया की बात उसे याद थी। उसे लगा क्यों ना दूसरे लोगों की भी मदद की जाए। उन बीजों को लेकर घूमने निकल पड़ा। रास्ते में उसे एक बूढ़ी औरत मिली। बात करने पर पता चला कि उसके बच्चे उसे छोड़कर चले गए हैं। अब उसे मदद करने वाला कोई नहीं है। वरुण ने एक बीज उसे दे दी और सारी बात बता दी। इसी तरफ से दिन भर में उसने सारी बीज लोगों को बांट दी । अब उसके पास कुछ नहीं था लेकिन उसे बहुत खुशी थी कि आज पहली बार अपने लोगों की मदद की है। रात में वह घर वापस आया और कुछ फल खा कर सो गया।

दूसरे दिन सुबह में उसने देखा कि पेड़ पर असंख्य फल लगे हुए हैं। खाने पर पता चला कि या और भी अधिक स्वादिष्ट हो गया है। अब उसे समझ में नहीं आ रही थी कितने फलों का क्या किया जाए। वह फलों को तोड़कर दूर पहाड़ी के चोटी पर रख आया कि पशु पक्षी खा सकें। फिर उसने कुछ फल अपन टोकरी में रखा और दूर के बस्ती में में जाकर बांट आया। अब यह उसका रोज का नियम हो गया। उसे अपने काम में खूब मन लग रहा था। लोग उसे पहचानने लगे और प्यार करने लगे। बच्चे उसे देखते हीं दौड़कर उसे घेर लेते।

धीरे-धीरे बात राजा के कानों में भी पहुंची। वह वरुण से फल मंगवाकर खाया। फल अत्यंत स्वादिष्ट था। अब वरुण रोज फल की टोकरी लेकर राजा के महल में जाने लगा। इसी तरह काफी वक्त बीत गया। वरुण के साथ और अच्छे स्वभाव से प्रभावित होकर राजा ने अपनी पुत्री का विवाह वरुण से कर दिया। राजकुमारी को महल के सुख सुविधा की आदत थी। वरुण के झोपड़ी में रहना उसके लिए अत्यंत कष्टकारी था। उसने वहां सुख सुविधा का सामान जुटाने का निश्चय किया। वरुण से बोली की वह किसी को मुफ्त में फल ना दें बल्कि उसके बदले में कुछ सिक्के या सामान ले।

वरुण को बात पसंद नहीं आई। उसने समझाया किया यह उसे मुफ्त में मिला है। इसके बदले में वह पैसा नहीं ले सकता है। पशु-पक्षी भी उसके फल खाते हैं वह उससे बदले में कुछ कैसे मांग सकता है। राजकुमारी को समझाया कि दोनों खेत में जाकर काम करेंगे। सुंदर-सुंदर को टोकरी और कपड़े बनाकर बेचेंगे और उससे धन कमाएंगे। लेकिन राजकुमारी नहीं मानी। वरुण को थक हार कर उसकी बात माननी पड़ी।

दूसरे दिन वरुण सर पर फल की टोकरी लेकर बस्ती की ओर निकला। उससे मन में बहुत पश्चाताप हो रहा था कि फल के बदले में लोगों से किस तरह पैसे मांगेगा । उसे मांगने की आदत नहीं थी। रास्ते में थककर एक वृक्ष के नीचे आराम करने लगा। उसी समय बहुत सारे बच्चे आ गए उसने सारे फल बच्चों में बांट दिए। पत्नी की बातें याद कर वह बहुत चिंतित हो गया। उसे घर जाने का मन नहीं हो रहा था। वहीं पेड़ के नीचे बैठे रहा। रात होने पर एक बूढ़ा व्यक्ति आया। उसने वरुण की बातें सुनी। बुढ़ा व्यक्ति के पास एक पोटली था उसने उसमें से कुछ कपड़े निकाल कर वरुण को दिए और चांदी के कुछ सिक्के दिए। वरुण खुशी-खुशी घर लौट गया। इस तरह वरुण रोज फल लेकर घर से निकलता है लोगों में बांट देता था। बूढ़ा व्यक्ति रोज उसे रात में मिलता और कुछ ना कुछ उपहार में देता था। वरुण ने यह बातें राजकुमारी को नहीं बताई थी।

इसी तरह कई माह बीत गए। राजकुमारी भी काफी खुश थी।अब उसके घर में कई तरह के सामान थे और उसका दिन काफी सुख से बीत रहा था। एक दिन कोई व्यापारी उधर से गुजर रहा था। वह दूर-दूर के देशों में फल का व्यापार करता था। उसने स्वादिष्ट फल के बारे में सुना और उसे खाने की इच्छा जाहिर की। वह वरुण के घर पहुंचा और खाने के लिए फल मांगा। फल अत्यंत स्वादिष्ट लगा। उसने राजकुमारी से सारी फसलें खरीदने की प्रस्ताव रखा। वरुण इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। लेकिन व्यापारी द्वारा अधिक दाम दिए जाने की पेशकश से राजकुमारी तैयार हो गई और फल को बेचने के लिए जीद कर बैठी।

व्यापारी रोज सुबह सारा फल तोड़कर ले जाता था। राजकुमारी की जिद के आगे वरुण कुछ कर नहीं पा रहा था। धीरे- धीरे पौधे में कम फल लगने लगे उसका स्वाद भी पहले जैसा नहीं रहा। वरुण ने व्यापारी और राजकुमारी को समझाया। लेकिन सभी उसकी बातों का मजाक बना दिए।

कुछ दिनों बाद सभी ने देखा कि पेड़ पर एक भी फल नहीं लगा है और पेड़ सूख चुका है। इस बात से वरुण काफी दुखी रहने लगा। वह घर छोड़कर चला गया और फिर कभी लौट कर नहीं आया। राजकुमारी को अपने भूल का एहसास हुआ लेकिन अब क्या हो सकता था।

इंकलाब

सर्वेश कुमार

बढ़े चलो कि इंकलाब इंतजार में है।
रोशनी की तलाश में भटकती जिंदगी
रिवाजों में कैद यह घुटती जिंदगी
दम-ब-दम मौत की ओर फिसलती जिंदगी
हलाल होते आरजूओं पर सिसकती जिंदगी
कब तलक हम बेबस रहें, लाचार रहें
बढे चलो कि इंकलाब इंतजार में है।

कई उम्मीद लिए जमाना देखे हमारी राह
कई दम तोड़ती आंखों में है हमारी चाह
हमको चिढ़ा रही है इतिहास के कुछ पन्ने
हमको लुभा रही है कल के कुछ सपने
लानत है जो सरनिगूं रहे, आजार रहे
बढ़े चलो कि इंकलाब इंतजार में है।

हम तोड़ कर लाएंगे आफताब हाथ में
हम छीन कर लाएंगे महताब रात से
हौसलों के आगे क्या औकात है पहाड़ की
हमारे इस जवानी में रवानी सौ चेनाव की
तक़दीर से क्यों नाराज रहें, बेज़ार रहें
बढे चलो की इंकलाब इंतजार में है।

हांगकांग और शोषण का चलन

अमरजीत सिंह

2019 में हांगकांग में चीन के विरुद्ध बहुत उग्र प्रदर्शन हुआ। लाखों की संख्या में लोग सड़क पर चीनी सरकार के विरूद्ध उतर आए।कहा जाता है कि एह चीन के शोषणकारी नीति का प्रतिफल है। घटना के संबंध में जाने से पहले यह अच्छा होगा कि हांगकांग के बारे में एक आधारभूत जानकारी दे दी जाए। हांगकांग दक्षिण चीन सागर पर स्थित एक बहुत बड़ा व्यापारिक नगर है। गहरे बंदरगाह के कारण इसकी भौगोलिक स्थिति व्यापारिक और सामरिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। काम के सिलसिले में यहां विश्व के हर देश के लोग आते रहते हैं जिससे यहां की जनसंख्या घनत्व काफी अधिक है। 1842 में चीन कि राजा को हराकर अंग्रेजों ने इस जगह पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया और लगभग डेढ़ सौ वर्षों तक ब्रिटिश शासन में रहने के कारण हांगकांग पर चीन से अधिक ब्रिटिश प्रभाव देखा जा सकता है। 1997 में इसे लीज पर चीन को सुपुर्द किया गया। चीन ने क्षेत्र के लिए 'एक राष्ट्र दो नीति' अपनाते हुए इस क्षेत्र के भावना के अनुरूप इसे विशेष प्रशासनिक क्षेत्र घोषित किया । इस तरह से इस क्षेत्र में चीन अपने मुख्य भूभाग की तरह कानून व्यवस्था से इसे कुछ भिन्न रखा। लेकिन लोगों को यह बात पसंद नहीं आई क्योंकि वह चीन के दमनकारी नीतियों से अच्छी तरह वाकिफ थे। उस समय में भी बहुत अधिक विद्रोह हुए। हालांकि हांगकांग में भी चीनी मूल के ही काफी संख्या में लोग हैं लेकिन उनकी विचारधारा ब्रिटिश प्रभाव के कारण स्वतंत्रता पसंद की है। उसमें से अधिकांश चीनी सरकार से अलग रहना ही पसंद करते हैं।

चीन की परिस्थिति और व्यवस्था कुछ ऐसा रहा है कि वहां पर हमेशा कठोरता पूर्वक शासन ही होता है । चीन के राजवंश भी शासन व्यवस्था में काफी कठोर होते थे और उसके बाद अंग्रेजों ने भी उसे खूब लूटा । अक्टूबर 1949 में आजादी की घोषणा के बाद माओ ने भी काफी कठोरता पूर्वक देश का शासन चलाया। लोगों की आर्थिक स्थिति काफी लंबे समय तक खराब रही। नाकामियों को छिपाने के लिए 'एक छलांग आगे', 'सांस्कृतिक क्रांति' आदि के द्वारा लोगों के स्वतंत्र चिंतन को कुचला गया। कई दूरदर्शी नेताओं के प्रयास से आर्थिक सुधार के कार्य किए गए लेकिन साम्यवादी विचारधारा के कारण लोगों को वह स्वतंत्रता प्रदान नहीं की गई जो भारत, अमेरिका जैसे गणतंत्र में दी गई है। लोग सरकार के विरोध में आवाज नहीं उठा पा रहे हैं। अपनी मांगे खुलकर व्यक्त नहीं कर पा रहे हैं और सोशल मीडिया पर अपने विचार भी अभिव्यक्त नहीं कर पा रहे हैं। हर तरह के मीडिया पर एक कठोर सेंसरशिप लगा हुआ है जो एक लोकतंत्र के लिए प्राणघातक हैं। कहा जाता है कि इस तरह का विकास स्थाई नहीं हो सकता है क्योंकि लोगों के मन में दबे गुस्से और उसके शोषण के कारण यह राज्य प्रायोजित विकास कभी भी धराशाई हो सकता है। चीन के विकास को दूध में उबाल से तुलना की जा रही है।

चीन के इन्हीं दमनकारी नीतियों के कारण हांगकांग के लोग शुरू से ही भड़के हुए थे। विशेष प्रशासनिक क्षेत्र घोषित किए जाने के समय से ही उन्हें इस बात की आशंका थी कि भविष्य में चीन उसके साथ उसी तरह का बर्ताव कर सकता है जिस तरह का बर्ताव मुख्य भूमि और तिब्बत आदि क्षेत्र के लोगों के साथ किया गया है। इसलिए उसने आरंभ से ही चीन के खिलाफ अपनी नाराजगी जाहिर की। धीरे-धीरे चीन ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए हांगकांग के शासन व्यवस्था में अपने विश्वस्त लोगों को बढ़ावा देना शुरू किया ।

सत्ता पर अपनी पकड़ बनाने की कोशिश की। लेकिन लोकतंत्र के हवा में सांस ले चुके लोगों को चीन के नीति की घुटन बिल्कुल पसंद नहीं आ रही है। 2014 में भी चीन के विरोध में बहुत बड़ा विद्रोह हुआ। यह लगभग ढाई महीने तक चला जिस से चीन बुरी तरह प्रभावित हुआ। बाद में उसे किसी तरह दबा दिया गया।

2019 में चीन में एक ऐसा कानून का प्रावधान किया गया जिसके अनुसार हांगकांग के कोई लोग अपराधिक कार्यों संलग्न पाए जाते हैं तो उसे चीन में स्थानांतरित किया जाएगा। इस प्रक्रिया का तात्पर्य हांगकांग के लोग भली-भांति समझते हैं कि चीन का उद्देश्य हांगकांग के लोगों को चीन में ले जाकर प्रताड़ित करना है इसलिए लोगों ने विभिन्न तरीकों से अपना विरोध जताया। इससे चीन की बड़ी आलोचना हुई।

यह सार्वभौमिक सत्य है कि किसी राष्ट्र का विखंडन उस समय होता है या क्षेत्र विशेष में जन आंदोलन तब होता है जब किसी का शोषण होता है। हांगकांग सभी राष्ट्र के लिए, सभी सरकार के लिए, प्रशासन के लिए एक सबक है कि वह ध्यान रखें कि कहीं किसी का शोषण नहीं हो। बड़े-बड़े बगावत की भूमिका यहीं से बननी शुरू हो जाती है।

पाकिस्तान के संदर्भ में भी हम देखते हैं कि वहां पर बलूचिस्तान को हमेशा नजर अंदाज किया गया है। देश के शासन प्रशासन और संसाधनों पर हमेशा पंजाब प्रांत का ही प्रभुत्व रहा है और इस तरह से वहां भी केंद्र सरकार के विरोध लोगों ने आवाज उठाने शुरू किए। सरकार हमेशा के लिए बनाई जाती है कि वह सार्वजनिक हित के लिए कार्य करे। अगर किसी के साथ शोषण हो रहा है तो फिर सरकार अपना अस्तित्व खो देती है। अपने सरकार से लोगों का विश्वास उठ जाना उस राष्ट्र के लिए बहुत ही अशुभ संकेत है।

हम भारत के संदर्भ में भी इस बात को नहीं नकार सकते हैं कि नक्सल आंदोलन इलाकों में अधिक फला फूला जहां पर सरकार द्वारा विकास के कार्य अत्यल्प या नहीं किए गए थे। एक सुसभ्य राष्ट्र का कर्तव्य है कि वह प्रबंध करे कि किसी भी इकाई का आर्थिक दृष्टि से सामाजिक दृष्टि से भाषाई आधार पर सांस्कृतिक आधार पर किसी तरह का कोई शोषण नहीं हो। उस समय ही एक राष्ट्र अपने आप को सही रूप में राष्ट्र कहलाने का हकदार होगा। चीन के लिए भी बेहतर हो सकता है कि वह अपने नीतियों को अधिक उदार लोकतांत्रिक और लोकोपकारी बनाएं जिससे उसका अस्तित्व स्थायित्व को प्राप्त करे।

येक सलाइ

एस निंथौजाउ सिंह

मेरा इस लेख को लिखने का उद्देश्य मणिपुर के मितैई समुदाय के नाम उपनाम और गोत्र से संबंधित कुछ जानकारियों को साझा करना है| विशेषकर उन सहकर्मियों और दोस्तों के साथ जो मणिपुर के नहीं है। जब मैं अपने उच्च शिक्षा के लिए भारत के अन्य राज्यों में गया तो लोग मुझे मेरे नाम और 'सिंह' उपनाम के बारे में पूछते थे। मेरे मंगोलिय रूप- रंग के साथ सिंह उपनाम देखना उनके लिए अजीब बात थी। मैं प्रायः कहता कि मेरे माता-पिता के द्वारा यह उपाधि दी गई है और मुझे इसके बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं है। यह संक्षिप्त जवाब अन्य संभावित प्रश्नों और विषयांतर से बचने के लिए होता था। यहां मैं इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए मणिपुर के वंश या गोत्र परंपरा "येक सलाई" के बारे में बताने से पहले चाहूंगा कि अपने नाम के बारे में सही विवरण दे दूं। मेरा नाम है सनजेनबम निंथौजाउ सिंह। सनजेनबम मेरा कुल या वंश का नाम है। निंथौजाउ मेरा नाम है और सिंह उपाधि है।

मणिपुर में हिंदुत्व के आने के बाद नामकरण पद्धति में भी काफी परिवर्तन हुए जो यहां के प्राचीन तरीका से अलग था। नए पद्धति में पहले अपना उपनाम , बीच में नाम और अंत में उपाधि रखने की परंपरा सामने आई। सनजेनबम उपनाम या कुलनाम या वंशनाम या यूमनक है जो मैं अपने पिता से प्राप्त किया हूं, क्योंकि मितैई समाज एक पितृसत्तात्मक समाज है । अपना उपनाम व्यक्ति के नाम का ही आवश्यक अंग है जिसके माध्यम से उसके वंश के बारे में जानकारी मिलती है। मेरा नाम निंथौजाउ मेरे दादाजी के द्वारा दिया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है- महाराज या सम्राट। सिंह शब्द मात्र लिंग सूचक है। मितैई लोगों में समान्यतः सिंह उपाधि से पुरुष का और देवी से महिला होने का पता चलता है। सनामही विश्वास के पारंपरिक मितैई लोगों में पुरुषों के लिए मितैई या मैते और महिलाओं के लिए लीमा उपाधि का प्रयोग किया जाता है। कुंवारी लड़कियों के लिए चानू शब्द का प्रयोग किया जाता है। उनमें से कुछ लोग अपने कुल या गोत्र का नाम भी प्रयुक्त करते हैं।

आजकल मणिपुर में अपने अतीत को पुनर्जीवित करने की के लिए कोशिश की जा रही है। प्राचीन धार्मिक विश्वास, लिपि एवं अन्य उत्सवों को फिर से अपनाए जाने पर काफी जोड़ दिया जा रहा है। लोग अपने पुराने पहचान के प्रति संवेदनशील हो रहे हैं। नई पीढ़ी के लोग प्राचीन परंपरा के अनुसार ही अपना नाम रख रहे हैं जो प्रकृति, ताकत और पूर्वजों के देवी देवताओं आदि से संबंधित है। सिंह या देवी उपाधि का प्रयोग कम हो रहा है।

येक सलाई व्यवस्था या कुल व्यवस्था के अंतर्गत मणिपुर के सभी मितैइ कुलों का वर्गीकरण किया गया है। प्रत्येक कुल के अंतर्गत अनेक उपकुल होते हैं जिसे सागई कहा जाता है। आरंभ में तीन मुख्य कुल थे मङाङ, लुवांङ और खुमन । मङाङ सलाई से ही अंगोंम और मोइरांङ सलाई अस्तित्व में आया। लुवांङ सलाई से ङानबा और सारंग लैसांगथैम सलाई अस्तित्व में आया। खुमन सलाई पूर्ववत बना रहा। वर्तमान में सात सलाई या गोत्र इस प्रकार है-

इन सात वंशों के नाम इस प्रकार हैं-

(क) मङाङ (ख) लुवांङ (ग) खुमन (घ) अंगोम

(ङ) मोइरांङ (च) खाबा ङानबा (छ) सारंग लैसांगथैम

सभी मितैइ लोग इन्हीं सात येक सलाई के उत्तराधिकारी या वंशज हैं। किसी व्यक्ति के वंश परंपरा से उसके प्राचीन मूल या गोत्र का पता लगाया जा सकता है। आरंभ में इन सात वंशों का मणिपुर के अलग-अलग क्षेत्रों में शासन था। इन सातो में आपस में कई युद्ध होते रहते थे। मणिपुरी समाज में अपने गोत्र में शादी करना मनाही है| अन्य किसी भी गोत्र के साथ शादी की जा सकती है। माना जाता है कि एक ही गोत्र में शादी करने से बच्चे अपंग़ पैदा होंगे, माता पिता की मृत्यु हो जाएगी, देवताओं का आशीर्वाद नहीं मिलेगा जिससे परिवार पर मुसीबतें टूट पड़ेगी।

सभी गोत्र या कुल के अंतर्गत कई तरह की उपाधियां प्रयोग की जाती है। उपाधियां उस समूह के काम, व्यवसाय या आदत के आधार पर प्रदान की गई। इन सातों गोत्रों के अंतर्गत सात सौ से अधिक उपाधियां प्रयोग की जा रही हैं। सभी उपाधियां "म" वर्ण से खत्म होती है। सभी उपाधियों का समाप्ति एम,अम या ओम जैसे शब्दों से होती है। उदाहरण के लिए नाम्रम, लाइश्रम , सोराइश्रम आदि । इन उपाधियों का का ऐतिहासिक महत्व भी है दिखाता है कि राजा के द्वारा इस समूह विशेष के लोगों को एक निश्चित कार्य करने के लिए दिया गया था। लोइयुम्पा सिलयेल , मणिपुर का प्राचीन संविधान या घोषणा पत्र कहा जा सकता है, के अनुसार उस समय के राजा लोइयुम्पा के द्वारा अलग अलग परिवार के लोगों को अलग-अलग कार्य करने के लिए दिया गया था और उसके अनुसार उसे उपाधियां भी दी गई थी। उदाहरण के लिए-

माइबम- चिकित्सक (मणिपुरी में डॉक्टर को माइबा कहते हैं)
माइरेमबम- कोहड़ा के किसान (मणिपुरी में माइरेन का अर्थ होता है कोहरा)
पोत्संगबम- राजा के संपत्ति का देखभाल करने वाला (पोत का अर्थ होता है संपत्ति)
थंगजम- तलवार बनाने वाला (थङ अर्थात तलवार) ।

आरंभ के दिनों में राज परिवार के लोगों के लिए इस तरह की कोई उपाधि नहीं दी गई। वे वर्तमान समय में अपने लिए राजकुमार या राजकुमारी शब्द का प्रयोग करते हैं तथा संक्षेप में आरके लिखते हैं। उसी तरह एमके का अर्थ होता है महाराज कुमार या महाराजकुमारी। यह उपाधि आजकल प्रयोग में है।

उल्लेखनीय है कि 14 वीं सदी में महाराज कियाम्बा के शासनकाल में बाहर से, मुख्यतः बंगाल से, ब्राह्मण लोग मणिपुर में आकर बसने लगे थे। उनमें से अधिकांश यहां की महिलाओं से शादी कर लिए और यहीं के होकर रह गए जिन्हें बामुन कहा जाता है। उन्हें यहां के सात कुलों के अलावा अलग-अलग उपनाम दिए गए। अरीबम, गुरु मयूम, फूराइलात्तपम इत्यादि ऐसे ही उपनाम हैं। बामुन लोग देवी देवताओं की पूजा अर्चना करने, धार्मिक अनुष्ठान करने, हिंदू और वैष्णव संबंधित ज्ञान देने का कार्य करने लगे । बामुन लोग स्वादिष्ट भोजन बनाने में निपुण थे और इसे अपना पेशा बना लिए।

पुनः, 16 वीं सदी में महाराज खांगेम्बा के समय में बंगाल से मुस्लिम लोग आकर मणिपुर में बसने लगे। जिन्हें पांगल या मितैई पांगल कहा जाता है। इन्होंने भी अलग-अलग उपनाम धारण किए। जैसे कि खुलाकपम, खूंदैबम और खुल्लैबम इत्यादि।

अंत में फिर से अपने कुलनाम के बारे में बताना चाहूंगा । सनजेनबम कुल नाम खुमन कुल से संबंधित है।मेरे पूर्वजों के द्वारा बताया गया कि प्राचीन काल में मेरे कुल के लोगों का मुख्य काम था गाय और पशुओं की देखभाल करना। मणिपुर में सन का अर्थ होता है- गाय । इस तरह सनजेबम शब्द अस्तित्व में आया।

सनामही

एस.बेमबेम लता देवी

सनामही या सनामही लाइनींग उत्तर-पुर्व का एक प्राचीन धार्मिक विश्वास है जो मणिपुर से आरंभ हुआ। यह शब्द मितैइ समुदाय के एक महत्वपूर्ण देवता सनामही के नाम पर रखा गया है। इस देवता की उपासना करते हुए कहा जाता है कि तारे उसी से रोशनी पाते हैं और सुर्य अपनी शक्ति के लिए उसी का प्रार्थना करता है। सनामही सम्प्रदाय को मानने वाले मितैइ और जेलिएन्ग्रेंग समुदाय के लोग मणिपुर के अलावे असाम, त्रिपुरा, म्यांमार और बांगलादेश में निवास करते हैं। इसके अलावा इंग्लैंड, अमेरिका और कनाडा में भी इस मूल के लोग रहते हैं।

मणिपुर में बहुदेववाद है। सनामही में भी अनेक तरह के देवी- देवताओं की पुजा की जाती है। एक सर्वशक्तिमान ईश्वर की कल्पना की गई है जिसे सिदबा मापु कहा जात है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है अविनाशी मालिक। अन्य देवता हैं- लाइनिङथाउ सनामही । लाइनिङथाउ का अर्थ हुआ-देवों के देव या महादेव। इबोधाउ पाखंग्बा भी एक देवता है। इबोधाउ के लिए हिंदी शब्द आदिपिता कहा जाता है। यह सनमही के छोटे भाई हैं। इमा लइमरल शिदवी एक देवी है। इमा का अर्थ मां होता है। इबेनधाउ इमोइनू को धन, समृद्धि एवं रसोई का देवी माना जाता है। यह मुख्य देवी देवता है जिसकी पुजा घरों में की जाती है।

इसके अलावा इमा पंथोइबी (युद्ध की देवी), इमा फोउओइबी (आनंद की देवी), इबोधोउ मारजिंग (खेल के देवता और उत्तर-पुर्व दिशा के रक्षक), इबोधोउ थांग्जिंग (ताकत के देवता और दक्षिण-पश्चिम दिशा के रक्षक), इबोधोउ वांगफरेल(वर्षा और मृत्यु के देवता तथा दक्षिण-पुर्व के रक्षक), इबोधोउ खोबरु (ताकत के देवता तथा उत्तर-पश्चिम दिशा के रक्षक) आदि की पुजा की जाती है।

मितैइ के हर घर में सनामही की पूजा की जाती है। वस्तुतः यह यहां का लोक देवता है। लगभग हर घर के एक कमरे में देवता का स्थान सुनिश्चित किया जाता है जो दक्षिण- पश्चिम कोना होता है। उस कोना में सनामही के पूजा के लिए कुछ प्रतीक चिन्ह व मूर्ति आदि रखे जाते हैं। इस कोना को 'सनामही काचीन' कहा जाता है।

मितैइ लोगों के अलावा कुछ आदिवासी लोग, तंखुल, कुकी, कबुई, कोम, पूरुम आदि भी इसकी पूजा करते हैं। कबुई लोग इसकी पूजा 'काचीन कलाई' के नाम से करते हैं जिसका अर्थ होता है कोने का देवता। तंखुल लोगों के लुईरा त्योहार के समय में, जो फसल के बुवाई से पहले होता है, में भी इस देवता की पूजा की जाती है और बत्तख सूअर आदि चढ़ावा के रूप में अर्पित किया जाता है।

लाई हरोबा मणिपुर के लोगों द्वारा मनाया जाने वाला बहुत बड़ा धार्मिक उत्सव या कर्मकांड होता है। यह यहां के संपूर्ण संस्कृति को दर्शाता है जिसमें पहाड़ी और मैदानी लोगों के बीच के घनिष्ठता को भी महसूस किया जा सकता है। इसे मनाने वाले लोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार एक-दो या अधिक दिन तक मनाते है। यह मणिपुरी समाज के धार्मिक भजन, यहां के पारंपरिक संगीत और नृत्य, सामाजिक मूल्य और प्राचीन समय सांस्कृतिक पहलुओं का एकीकृत प्रदर्शन होता है।

लोग अपने घर में देवता को ताजे फल, कंदमूल और मौसमी सब्जी चढ़ाते हैं। अनाज भी चढ़ाये जाते हैं। ये सारी चीजें अपने मूल रूप में ही होती अर्थात उसे रसोई में तैयार नहीं किया गया होता है। अर्पित की जाने वाली चीजे प्रायः शाकाहारी होती है।

सनामही मंदिर

हिंदुत्व के आने के बाद राजा पाम्हैबा जिसे बाद में 'गरीब नवाज' भी कहा जाता है के प्रयास से लोग वैष्णव भजन कीर्तन आदि अपनाने लगे। इससे मणिपुरी समाज में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आया था। लेकिन सनामही विश्वास के मानने वाले लोग अपने कुछ पुराने परंपराओं को बचाकर रखे । चाचर के एक विद्वान, नाओरिया फुलो ने बहुत सारे मितैइ ग्रंथ जो नष्ट कर दिए गए थे या भुला दिया गए थे , के बारे में लोगों को फिर से जानकारी दिए और इस संबंध में बहुत सारी किताबें और टीका लिखे।

वर्तमान में लोग हिंदू धर्म के साथ साथ हैं सनामही विश्वास का भी पालन करते हैं । कुछ अतिवादी लोग प्राचीन परंपराओं को हूबहू लागू करने के लिए कोशिश करते हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है।धर्म का मूल उद्देश्य व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास करना है, जो हमें नहीं भूलना चाहिए।

लोरी गीत

अभिनव चंद्रा

देखो देखो चंदा आया
मुन्ने को बुलाया
करने मीठी बात रे।
अंगना में डाल दो खाट रे।

यहां घूमे वहाँ घूमे
घूमे हर डगरिया
वन जाए उपवन जाए
जाए हर नगरिया
थक कर सो जाए
निमिया के गाछ पे।
अंगना में डाल दो खाट रे।

बादल के संग खेले
मुस्काए हौले हौले
पुरबा हिलाए पलना
धीमे धीमे चंदा डोले
चले लेकर तारों की बारात रे
अंगना में डाल दे खाट रे ।

राजा देखे हाथी घोड़ा
रानी देखे मोतिया
चंदा निहारे हरदम
मुन्ना की ओरिया
इन्जोर लुटावे दोनों हाथ से।
अंगना में डाल दो खाट रे ।

उसे हिंदी नहीं आती

गुलशन कुमार

ज़ुबाने-यार मणिपुरी
यही है अपनी मजबुरी
बात कुछ बढ नहीं पाती
उसे हिंदी नहीं आती ।

रंगों में लिपटी-सी
मेरे पास है बैठी
खामोश होते दोनों
धडकनें बढ़ती हैं जाती
उसे हिंदी नहीं आती

कवियों से शायरों से
उधार कुछ गीत लाया था
डबोकर प्यार के रस में
उसको सुनाया था
पर बेबस शब्द हुए सारे
प्रीत निखर नहीं पाती
उसे हिंदी नहीं आती

जब तक घूल नहीं जाते
शब्द अनजाने मिश्री से
हम अपनी आंखों को
बात करने दें दूजे से
बात कुछ भी हो दिल की
आंख पहचान जाती है
फिलहाल हिंदी नहीं आती

कृषि सुधार – 2022 तक दोगुनी आय की योजना

सरांथेम बेबेथोइ देवी

भारत मुख्य रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था है। यहां लोगों की आय का मुख्य आधार कृषि है। लगभग आधी आबादी सीधे कृषि और संबद्ध क्षेत्र पर निर्भर है। देश के सकल घरेलू उत्पाद का 18% कृषि क्षेत्र से प्राप्त होता है।राष्ट्रीय कार्य बल का 50% से अधिक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस क्षेत्र में कार्यरत है। अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए वर्तमान सरकार ने कृषि मंत्रालय का नाम बदलकर कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय कर दिया है। सरकार कृषि क्षेत्र को पुनर्जीवित कर रही है जिसमें केवल अधिक उत्पादन प्राप्त करने पर ही नहीं बल्कि आए को अधिक से अधिक करने पर भी ध्यान दिया जा रहा है।

आय को दोगुना करने के योजना अंतर्गत उच्च उत्पादकता प्राप्त करने, खेती की लागत कम करने और उपज का पारिश्रमिक मूल्य को कम करने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है ताकि खेती से उच्च मुनाफा कमाया जा सके। विभिन्न योजनाओं और नीतिगत सुधारों के माध्यम से पहलुओं को इस दृष्टिकोण के अनुरूप बनाया जा रहा है। कृषि क्षेत्रों के लिए आवश्यक बजट आवंटन में भी वृद्धि करके इस तरह के प्रयासों को समर्थन दिया गया है। इसके अलावा बजट के संसाधनों के पूरक के लिए गैर बजटीय संसाधन भी जुटाए गए हैं।

किसान आय दोहरीकरण से संबंधित समिति ने किसानों की आय को अपने मुख्य एजेंडे के रूप में शामिल किया है और इसे अपनी रणनीति के लिए प्रेरणा आधार माना है। हाल ही में भारतीय कृषि के परिवर्तन के लिए मुख्यमंत्रियों की एक उच्च अधिकार प्राप्त समिति का गठन किया गया है इस समिति की दो बैठक 18 जुलाई 2019 और 16 अगस्त 2019 को हुई है ताकि उनकी रिपोर्ट के आलोक में कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा सके।

वर्तमान में सरकार किसानों के उत्पादन और आय को बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाओं को लागू कर रही है और नीतिगत उपाय कर रही है। इसमें से कुछ इस प्रकार हैं-

1. उच्च उत्पादकता के लिए उचित उत्पादन वाले फसल

अनाज, दलहन, तिलहन, पोषक तत्वों से भरपूर अनाज, वाणिज्यिक फसल आदि के अधिक से अधिक उत्पादन के लिए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (NFSM) शुरूकिया गया है।

बागवानी फसलों से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय बागवानी मिशन (एम.आई. डी. एच.) शुरू की गई है।

तिलहन और ताड़ का तेल के उत्पादन को बढ़ाने के लिए 2014- 15 में राष्ट्रीय मिशन शुरू किया गया है।

2. कृषि की लागत में कमी के लिए

रासायनिक उर्वरक के विवेकपूर्ण और इष्टतम उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना लागू की गई जिससे किसानों की लागत को कम किया जा सके। नीम युक्त यूरिया को प्रचलन में लाया गया जिससे यूरिया के उपयोग को विनियमित करने, फसल को नाइट्रोजन की उपलब्धता बढ़ाने और अनावश्यक उर्वरक प्रयोग को रोकने एवं इसकी लागत को कम करने के लिए बढ़ावा दिया जा रहा है। 'हर खेत को पानी' के आदर्श के साथ प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना आरंभ की गई है जिसमें जल स्रोतों के वितरण, नेटवर्क और हर खेत के लिए सिंचाई की आपूर्ति श्रृंखला तैयार की जा सके।

3.लघु और मझोले किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए

भारत सरकार ने छोटे और सीमांत किसान परिवारों को प्रति वर्ष ₹6000 की राशि देने के उद्देश्य प्रधानमंत्री योजना शुरू की है। इस योजना के शुरू में केवल 2 हेक्टेयर तक भूमि रखने वाले छोटे और सीमांत किसानों को लाभार्थियों के रूप में शामिल किया गया था। लेकिन अब सरकार ने भूमि के आकार को नजरअंदाज करते हुए सभी किसान परिवारों के लिए इस योजना को लागू की है जो कुछ शर्तों के अधीन है। राज्य सरकार और केंद्र शासित प्रदेश प्रशासन उन किसान परिवारों की पहचान कर रही है जो योजना के दिशा निर्देशों के अनुसार पात्र हैं। फंड सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में स्थानांतरित किए जाने का प्रावधान है। अब तक इस योजना के अंतर्गत लगभग 6.5 करोड से अधिक लाभार्थियों को 20520 करोड़ से अधिक की राशि स्थानांतरित की गई है।

प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना (पीएमकेएमवाई) शुरू की गई है जिसमें 60 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर पात्र किसानों को न्यूनतम ₹3000 प्रतिमाह पेंशन का भुगतान करने का प्रावधान है यह 18 से 40 वर्ष की आयु के व्यक्ति के लिए स्वैच्छिक और अंशदाई पेंशन योजना है। किसानों द्वारा मासिक योगदान उनकी आयु के आधार पर 55 से ₹200 के बीच है। केंद्र सरकार पेंशन योजना में एक निश्चित राशि का योगदान करेगी।

4. उत्पाद से लाभ प्राप्त करने के लिए

राष्ट्रीय कृषि बाजार योजना (ई-नेम) कम समय में बेहतर कीमत की खोज सुनिश्चित करने, पारदर्शिता लाने और किसानों को उनकी उपज के लिए पारिश्रमिक प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए कृषि बाजारों में क्रांति लाने के लिए 'एक राष्ट्र एक बाजार' के विचार को अपनाए हुए एक अभिनव योजना है।

किसान उत्पादन संगठन (एफ.पी.ओ.) ई-नेम पोर्टल पर उपलब्ध है और उन्होंने व्यापार के लिए अपनी उपज को अपलोड करना शुरू कर दिया है।

किसानों के लिए बेहतर मूल्य निर्धारण के लिए वैकल्पिक प्रतिस्पर्धा विपणन चैनलों को बढ़ावा देने और कुशल विपणन बुनियादी ढांचे के विकास में निजी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए राज्यों केंद्र

शासित प्रदेशों द्वारा अपनाए जाने के लिए मॉडल कृषि उत्पाद और पशुधन एवं संवर्धन और सुविधा अधिनियम 2017 को 24 अप्रैल 2017 को जारी किया गया है। इस अधिनियम के प्रावधानों में निजी बाजार, प्रत्यक्ष विपणन, किसान उपभोक्ता बाजार, विशेष वस्तु बाजार की स्थापना और गोदाम, साइलो, कोल्ड स्टोरेज जैसी संरचनाएं शामिल है।

मौजूदा 22000 ग्रामीण हाटों को ग्रामीण कृषि बाजार के रूप में विकसित और उन्नत बनाया जा रहा है। यह ग्राम इलेक्ट्रॉनिक रूप से ई-नेम पोर्टल से जुड़े हुए हैं। यह कृषि उपज विपणन समितियों के नियमों से छूट देते हुए किसानों को उपभोगता और थौक खरीददारों के पास सीधे बिक्री करने की सुविधा प्रदान करेंगे।

किसानों द्वारा रियायती दर पर भंडारण और फसल कटाई के बाद आसानी से ऋण देने का प्रावधान किया गया है ताकि किसानों द्वारा मजबूरी में फसल की बिक्री नहीं करनी पड़े और उन्हें अपनी उपज का भंडारण करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

न्यूनतम समर्थन मूल्य के लिए सरकार द्वारा कुछ फसलों को समय-समय पर अधिसूचित किया जाता है। किसानों की आय के लिए एक बड़ा बढ़ावा देते हुए सरकार ने हाल ही में 2019-20 के लिए सभी खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि को मंजूरी दी है।

मौजूदा 22000 ग्रामीण हाटों को ग्रामीण कृषि बाजार के रूप में विकसित और उन्नत बनाया जा रहा है। यह ग्राम इलेक्ट्रॉनिक रूप से ई-नेम पोर्टल से जुड़े हुए हैं। यह कृषि उपज विपणन समितियों के नियमों से छूट देते हुए किसानों को उपभोगता और थौक खरीददारों के पास सीधे बिक्री करने की सुविधा प्रदान करेंगे।

किसानों द्वारा रियायती दर पर भंडारण और फसल कटाई के बाद आसानी से ऋण देने का प्रावधान किया गया है ताकि किसानों द्वारा मजबूरी में फसल की बिक्री नहीं करनी पड़े और उन्हें अपनी उपज का भंडारण करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

न्यूनतम समर्थन मूल्य के लिए सरकार द्वारा कुछ फसलों को समय-समय पर अधिसूचित किया जाता है। किसानों की आय के लिए एक बड़ा बढ़ावा देते हुए सरकार ने हाल ही में 2019-20 के लिए सभी खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि को मंजूरी दी है।

कृषि और बागवानी की वैसे उत्पाद जो आसानी से खराब हो जाते हैं और पी. एस. एस. योजना के अंतर्गत नहीं आते हैं उसके लिए बाजार हस्तक्षेप योजना शुरू की गई है।

5. जोखिम प्रबंधन और स्थाई प्रबंध

प्रधानमंत्री मुद्रा बीमा योजना और पुनर्निवेशित मौसम आधारित फसल बीमा योजना फसल चक्र के सभी चरणों में बीमा सुरक्षा प्रदान करती है। इस में फसल कटाई के बाद के जोखिम भी शामिल हैं और किसानों को प्रीमियम की बहुत कम दरों पर उपलब्ध है। सरकार अल्पकालिक फसलों पर 5% ब्याज दर पर ₹3 लाख तक का ऋण (त्वरित भुगतान पर कुल 3% प्रोत्साहन सहित) प्रदान करती है इस प्रकार किसानों को (त्वरित पुनर्भुगतान पर 4% प्रति वर्ष से) कम दर पर ऋण उपलब्ध है।

परंपरागत कृषि विकास योजना को देश में जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य लागू किया जा रहा है। इससे मृदा स्वास्थ्य और कार्बनिक पदार्थों में सुधार होगा और किसानों की आय में भी वृद्धि होगी ताकि प्रीमियम कीमतों का एहसास हो सके।

उत्तर पूर्व में मिशन जैविक खेती- देश के उत्तरी पूर्वी क्षेत्रों में जैविक खेती की संभावनाओं को साकार करने के लिए मिशन जैविक खेती शुरू की गई है।

6.अन्य सहायक योजनाएं

फसलों में सुधार के साथ-साथ 2016-17 में वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य 'हर मेरे पर पेड़' योजना लागू की गई है। कई राज्यों में इस तरह की योजना का कार्यान्वयन शुरू हो गई है और बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण किया जा रहा है। लकड़ी के प्रयोग के लिए उदार पारगमन नियमों को अमल में लाया गया है। कृषि के साथ-साथ वन लगाने से मिट्टी के जैविक कार्बनिक को बढ़ाने में मदद मिलेगी, साथ साथ किसानों को एक आय का अतिरिक्त स्रोत प्राप्त होगा। किसानों की आय को बढ़ाने के लिए इस संदर्भ में 2018-19 में राष्ट्रीय बांस मिशन की घोषणा की गई है।

किसानों को मधुमक्खी पालन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है इससे परागण की क्रिया के द्वारा फसलों की वृद्धि में भी मदद मिलेगी और साथ ही साथ शहद के उत्पादों को बेचकर किसान अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकेंगे।

इसके द्वारा अत्यधिक दूध उत्पादन कर किसान की आय को बढ़ाया जा सकता है। मत्स्य क्षेत्र में उच्च संभावना को देखते हुए इस क्षेत्र के विकास पर ध्यान दिया जा रहा है। नीली क्रांति योजना के अंतर्गत अंतर्देसी और समुद्री दोनों जगहों पर मत्स्य उत्पादन को बढ़ाने के लिए कार्य किया जा रहा है।

दूध के उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी डेयरी संबंधी तीन महत्वपूर्ण स्कीम है-.

1. राष्ट्रीय डेयरी योजना (NDP -1),
2. राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम (NPDD) और
3. डेयरी उद्यमिता विकास योजना ।

2014 के दिसंबर में राष्ट्रीय गोकुल मिशन शुरू किया गया जिसमें स्वदेशी पशुओं और भैंसों की प्रजाति और संख्या में उत्तरोत्तर सुधार के लिए कोशिश की जा रही है। चारा की पर्याप्त उपलब्धता और गुणवत्ता के साथ साथ पशुधन विशेषकर छोटे-छोटे पशु, बकरी, भेड़, मुर्गी आदि के गहन विकास को सुनिश्चित करने के लिए 2014 15 में राष्ट्रीय पशुधन मिशन शुरू किया गया है।

किसानों की आय कृषि (बागवानी सहित), डेयरी, पशुधन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन एवं अन्य सहायक गतिविधियों पर निर्भर है। वह मजदूरी एवं अन्य पारंपरिक गतिविधियों से भी कमाई करता है।

यह आशा की जाती है कि कृषि संबंधी चुनौतियों और किसान कल्याण के उद्देश्य को साकार करने के लिए उच्च और स्थिर आय अत्यंत जरूरी है। इसके लिए बीमा प्रदान करने न्यूनतम समर्थन मूल्य का निर्धारण मानसून के दौरान भंडारण जैसी कई चुनौतियां सामने खड़ी है। अभी भी बाजार और वितरण के तरीकों में सुधार करने की आवश्यकता है। खाद्य पदार्थों जैसे प्याज आदि के दाम में अनियंत्रित वृद्धि हो जाती है। इसके लिए समय-समय पर सरकार द्वारा आवश्यक वस्तु की आयात और प्रतिबंध को नियंत्रित किया जाता है। वर्तमान में सरकार के प्रयास से एक उम्मीद जगी है कि 2022 तक किसानों की आय को दोगुनी की जा सकती है। कृषि आय के क्षेत्र में यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन होगा।

दुर्लभं भारते जन्म मानुष्यं तत्र दुर्लभम् ।

भारत में जन्म लेना ही दुर्लभ है, मनुष्य रूप में भारत में जन्म लेना उससे भी अधिक दुर्लभ है ।

अभिमन्यु कुमार वर्मा

साम्राज्य और समाज

आज तक मानव इतिहास में

अनगिनत प्रयास हुए

साम्राज्य बनाने की

पराक्रमी लोगों ने

सुरमाओं को जमा किए

सयानों को बुलाए

अपनी प्रतिभा का बुंद बुंद निचोड़कर

अपने अनंत भुख को बहलाए

पर इससे मानवता को मिलती है

सदियों तक रिसते घाव मात्र

जिसे स्वार्थ जगाए रखता है

वक्त के थपेड़े से टूट जाते हैं

गुरुर भी साम्राज्य भी

लेकिन करोड़ों जीवन का क्या

जो कत्ल हुए थे कल भी

और तबाह है आज भी

लेकिन अपने अनुभवों से

हमने यह सीखा है

व्यर्थ है धन भी, यश भी

किसी के जीवन की कीमत पर

व्यर्थ है लाली महल की

झोपड़ी से रक्त लेकर

परिस्थिति की दबाव से

न व्यर्थ हो जीवन किसी का

कोई न रोए भाग्य पर

कोई न हो मन से अकेला

हम मिलकर साथ चलेंगे

मंजिल की ओर, हाथ पकड़े

हवा पानी दी जो कुदरत ने

बांटेंगे विवेक से

जरुरतभर, योग्यतानुसार

कि न रहे संभावना हीं

शोषण का, भावजड़ता की

मनीषियों के स्वप्न-सा

धरा को सजायेंगे

अब हम साम्राज्य नहीं

नया समाज बनायेंगे

शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम् ।

शरीर को स्वस्थ रखो क्योंकि यही धर्म का साधन है ।

मितैई लोक संगीत

लाइश्रम बिश्वोया देवी

लोक संगीत सरल, मधुर और छंदमय रचना होती है जो कलात्मकता के परिभाषा से दूर होने पर भी आमजन के दिलों के करीब होती है। यह उच्च क्षमता वाले मस्तिष्क की उपज नहीं होती बल्कि सामान्य भावनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति होती है। इसमें हम समाज की परिस्थिति एवं परिवेश को महसूस करते हैं। सामाजिक खुशी, दु:ख, समस्याएं, चिंताएं और उस क्षेत्र विशेष के लोगों की चिंतन से परिचित होते हैं।

लोक संगीत की मुख्य विशेषता शब्द और नाद का सहज मिश्रण तथा लोगों की भावनाओं का स्वभाविक प्रवाह है। इसका अस्तित्व साहित्य के लेखनी में नहीं बल्कि मौखिक परंपरा में निहित होती है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक निरंतर प्रवाहित होती रहती है और आम जनों के होठों पर सुशोभित रहती है। परिष्कृत और शास्त्रीय गीतों की तरह लोक संगीत गाने के लिए किसी विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं होती है। आमजन इसे सहज रुप से गाते हैं और अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

अन्य क्षेत्रों की तरह मणिपुर के लोक संगीत भी अपनी मिठास और जीवन से जुड़ी होने के कारण प्रशंसनीय है। इसका इतिहास उतना हीं पुराना है जितना पुराना मणिपुर के भाषा एवं संस्कृति का इतिहास है । मणिपुर का लोक संगीत मणिपुर के शास्त्रीय संगीत के तुलना में यहां की संस्कृति को अधिक बेहतर तरीके से प्रकट करता है क्योंकि यह आम लोगों के जीवन से प्रेरणा पाकर ही अस्तित्व में आता है।

वस्तुतः मणिपुरी लोक संगीत मणिपुर के लोगों के जीवन के उत्साह और उमंग के साथ-साथ धार्मिक मान्यताएं, आंदोलन, बहादुरी पूर्ण कारनामे, अभियान, रीति-रिवाज, परंपराएं, मान्यताएं, प्यार, जुदाई, सुंदरता, संपदा, दुख- दर्द आदि जीवन के हर पहलू को मधुर और सरल शब्दों में व्यक्त करता है। प्राचीन समय से हीं संगीत नृत्य और धार्मिक विश्वास मणिपुर के लोगों का अभिन्न अंग रहा है।

मणिपुर जैसे परंपरा पसंद समाज के लिए लोक संगीत अत्यंत महत्वपूर्ण है। कई तरह के सामाजिक परंपराओं, रस्मों और उत्सवों के समय में इन गीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया जाता है। विभिन्न त्योहारों के समय गाने वाले ग़ीतों की भी अधिकता है। उदाहरण के लिए लाई हराओबा त्योहार के समय में हिजन हिराओ गीत अनिवार्य रुप से गाया जाता है। प्रेम भावनाओं से परिपूर्ण और श्रृंगारिक गीत भी, जो स्त्री पुरुष के प्रति पारस्परिक आकर्षण से संबंधित होते हैं, काफी चाव से गाए जाते हैं। इसे युवक युवतियों के अलावा बड़े लोगों के द्वारा भी पसंद किए और गाए जाते हैं क्योंकि यह इंसान के उन कोमल भावनाओं को छूती और अभिव्यक्त करती है जो आदिमकाल से सहज रूप से उसमें विद्यमान है ।

लोक संगीत से लोगों के मनोरंजन होने के साथ-साथ उनके विषाद भी दूर होता है। जिस जगह पर आम लोगों को जीविकोपार्जन के लिए अत्यधिक कठोर श्रम करना पड़ता है वहां पर संगीत एक औषधि के रूप में कार्य करता है । मणिपुर के कठिन भौगोलिक क्षेत्र में धान की कृषि या चावल प्राप्त करने के समय अपने कार्य के परेशानी और उबाऊपन को दूर करने के लिए संगीत अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ है। उसी तरह से मछलियों और पक्षियों के शिकार में गए पुरुष भी लौटते वक्त गीत गाकर अपने थकान को दूर करते हैं। किसी महत्वपूर्ण घटनाओं को लोक संगीत में स्थान मिलने के बाद यह एक से दूसरे लोगों में और पीढ़ियों में आसानी से प्रवाहित होता है। यह किसी खबर या विश्वास के प्रचार का भी एक सशक्त माध्यम रहा है।

मणिपुर में कई तरह के खेल और पारंपरिक नाटक हैं जिसमें संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। लेकिन आजकल इस तरह के कार्यक्रम और संगीत का ह्रास हो रहा है। आधुनिक शिक्षा प्राणाली में बच्चों द्वारा सहज रूप से गायी जाने वाली छोटी-छोटी मणिपुरी कविताएं और गीत भी देखने को नहीं मिल रहा है।

मणिपुर के लोकगीतों को खुल्लङ इशै या खुन्नुङ इशै कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ हुआ ग्रामीण संगीत। मैतै समुदाय में चलने वाले गीत कई तरह के होते हैं जिसे मुख्य रूप से निम्न समूहों में बांटा गया है-

धर्म और अनुष्ठानों से संबंधित गीत

प्रेम और चाहत के गीत

उत्सव के गीत

श्रम गीत

लोरी और बच्चों के गीत

<u>धार्मिक व अनुष्ठान संबंधित गीत</u>

मणिपुर में कई तरह के गीत हैं जो देवी देवताओं को समर्पित हैं। इन गीतों में एक महत्वपूर्ण गीत सना लमोक है जो पाखंगबा आदि देवताओं के लिए माइबा (पुरोहित) द्वारा गाया जाता है। इसका विवरण नाओथिंखोङ फम्बाल काबा में मिलता है| सना लमोक महाराज नाओथिंग्खोंग के समय में भी प्रचलन में था । वर्णन मिलता है कि जब राजा शिकार से या किसी सैन्य अभियान से लौटते थे तो उस समय यह गीत गाया जाता था । माना जाता था कि इन गीतों को सही तरीके से गाने से राजा की आयु में वृद्धि होगी एवं उनकी रक्षा होगी । इसकी उत्पत्ति के संबंध में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है।

<u>प्रेम और चाहत के गीत</u>

मणिपुर के लोकगीतों में प्रेम तत्व का महत्वपूर्ण स्थान है। ये गीत भावना से परिपूर्ण होते हैं। यहां की हरी - भरी वादियों, झीलों और खेतों में बिना किसी साज के गूंजते प्रेम गीत अद्भुत होते हैं। खेत में काम करता हुआ युवक या किसी तालाब में मछली मारता हुआ युवक अपने आसपास काम करते किसी युवती या युवती के समूह को संबोधित करते हुए गीत की शुरुआत करता है तो दूसरी ओर से भी प्रत्युत्तर में गीत के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया जाता है। प्यार- मोहब्बत, चुहल बाजी और छेड़छाड़ से भरे इन गीतों को खुल्लङ इशै कहा जाता है।

प्रेमी- प्रेमिका और अमूर्त प्रेम को कई प्राकृतिक वस्तुओं से तुलना करने की परंपरा मणिपुरी लोक गीतों में भी देखने को मिलता है। प्राय: लड़कियों को सुंदर फूल और लड़कों को काला भ्रमरा के रूप में वर्णन देखने को मिलता है।

मणिपुर के सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक सभी पहलुओं को यहां के विशाल लोकतक झील ने काफी प्रभावित किया है। लोकताक में मछलियों के शिकार के वक्त युवक-युवतियों के प्रेम गीत को लोकतक डानै कहा जाता है। एक प्रेम गीत की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं-

लड़की - इनुङबा नारल चंदौरे योइमयाइ चीङया थङखरे तोरबुङ नुङसीत नामीबी मतारोकी खाङगोंबा लोकताक पाङनदा शितलकले हो....शितलकले दे...

(सूरज डूबने चला है। तोरबुंग की कितनी प्यारी और शीतल हवा बहने लगी है)

लड़का - क्वाक्तागी नुङसीत नामीबा मालङना लीरी हुम्बदी निङोलगी शमलाङ चोईजाइरे मौगी सिङद्बू चलहल्ली हो... चलहल्ली चलहल्ली दा ...

(हां यह क्वाक्ता की हवा तुम्हारे मुलायम रेशमी बालों को बिखरा रही है। अब तुम एक सुंदर महिला के रूप में निखरती जा रही हो)

लड़की-- हा..इबुङो केगे पाखङ कनानो मोइराङगी पाखङ नङबु कनानो ङसी कोरौ नुमीत्ता निङोल लाइबक चाओबिना पाइया चेपसी लोङ सङाई याइनबु लोङबुदी निङलगी खुत्ता पाइरे हायरगा लेमलै ङामीमक्तबु थेम्बदी पामुबा नशुंलांगीनि हो नुंशीबा नहाकथवकीनि अ..इबुङो..

(इस गोधूलि बेला में निकट तालाब में मछली मारते युवक । तुमने मेरा दिल चुरा लिए। तुम किस वंश की हो - मोइरांग या खुमन ।)

लड़का - हा...इबेमा मीगीहो मचाशु पामुबी नङबु निङोल ओइबी नङगी थमोइबु लोइबी चिङदा हौबा पामेंशिङजागुम खल्लेरगा पाखङ ऐगी थमोइना कबो तेनसीन तेनवामक्तबु ओइरेरगा निङोल ओइबी नङगी थमोइबु पाखङ लाइबक चाओबा ऐगी थमोइना पामेन्ना शीङजा लङबगुम लङशीनजरुरेने पामुबी नङबु हैगुम हैशुङ नाइनगुम्से लैराङ लैचा शेत्नागुम्से नुङसीबी नङबु निङोल ओइबी नङना पाखङ ऐगी मोङबा मरानयाइदा लाक्कदबा कोरौ नुमितुबु लोइदाम थाजदो इबेम्मा हाइबेम्मा नुजा मतम ओइरेको पमुबी .

(मैं तुमसे बस इतना कहना चाहता हूं कि मेरा दिल तुम्हारे प्रति प्यार से लबालब भरा हुआ है। मैं चाहता हूं तुम्हें अपने घर ले जाऊं जहां तुम मेरी प्यारी पत्नी के रूप में रह सको।)

लड़की - मरीङगी तेनदी नायातपी थौनाइ तेनदी कुकुपा यरौना सङाई मङोलदा थागदबा तेंदुबु निङोलगी थमोइ लाइयुम्दा तेन्ना थूम्ना पाल्लेदो हो तेन्जै शत्शी शतङम्दे .

(जिस तरह शिकारी के तीर संगाई हिरण को घायल कर देता है वही तीर मेरे दिल में लग गई है और मैं उसे अलग नहीं कर पा रही हूँ)

अलग-अलग उत्सवों से संबंधित गीत

मणिपुर में भिन्न भिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले गीत भी काफी विविध और भावप्रवण होते हैं । उदाहरण के लिए थाबल चोङबा(एक प्रकार का होली नृत्य) के समय गाये जाने वाले गीत । इसमे एक मुख्य गायक ढोलक पर अपने गीतों को गाते हैं और साथी गायक समुह में उसके बोल को दुहराते हैं । नए गीत शुरु करने के लिए मुख्य गायक जोर से "हरि बोल" का जयघोष करते है जिसके जवाब में साथी मंडली "हे हरि" का जयकार करते हैं जिसका अर्थ हुआ गीत आगे बढाया जाए ।

श्रम गीत

मणिपुर के अधिकांश श्रम गीत धान की कृषि से संबंधित है जो धान के रोपने, काटने, कुटने और भूसा अलग करते वक्त गाया जाता है । इसे फौशु इशै कहा जाता है ।एक गीत इस प्रकार है-

हयुम यानबा थौदाङकोक शीङ चल्लकउ हायरगा फौ पुरकपा यानबा नङना चाकपु हायरगा फौगाक चजीक नम्थीबा चाक्पु शादना पीजगे नङना येंशाङ हायरगा लफू येङाङ थुमनम्दबी येंशाङ शाना पीजगे नङना ङाबु हायरगा खोङबांदगी ङाचकतो ङाबु शाना पीजगे

इस गीत में मालिक अपने सेवक से कहता है कि जब मै तुम्हे लकड़ी काटने के लिए कहा तो तुम धान लाने चले गए। जब तुम मुझसे खाने के लिए मांगोगे तो मै तुम्हें भात के बदले बासी फौगाक दूंगा । जब तुम मुझसे तरकारी मांगोगे तो तुम्हे बिना नमक वाली केला का झोल दूंगा । जब तुम मछली मांगोगे तो तुम्हे गड्ढे का मेढ़क का बच्चा दूंगा ।

लोरी, बालकविता और गीत

मणिपुर में बच्चों के लिए अनेक गीत उपलब्ध है। मां अपने बच्चों के लिए कई गीत गाती है जो मुख्यत: यहां के दैनिक जीवन, प्रकृति और छौटी- मोटी घटनाओं से जुड़े होती है। बच्चों के खेल के दौरान प्रतियोगिताओ के लिए भी अनेक तरह के गीत उपलब्ध है। लोरी को मणिपुरी में नाओसुम या नाओथेम इशै कहा जाता है। एक लोरी प्रस्तुत है-

था था थबुंगतोन
नाचा मोराम्बी पोबीगे
पोबी सनम नमबीगे
हैबोन्ग चरोंग अमातंग
थादाबिराक उ ने थाबुंग्तोन

इसका अर्थ है- चंदा, चंदा ओ सुंदर चंदा, अपने बच्चे को मेरे पीठ पर बैठा दो । कृपया एक गुच्छा अंजीर मेरे लिए गिरा दो।

अवर्णीय को व्यक्त करने का सर्वोत्तम साधन मौन है, इसके बाद संगीत का स्थान आता है ।

- एल्डस हेक्स्ले

मैकाले की नीति

एस. लेत्मीनलाल हाउकिप

हम भारतीयों में अपनी संस्कृति को लेकर गर्व का भावहै और यह होना भी चाहिए। हमें अपने प्राचीन शिक्षा पद्धति पर भी नाज है और हम उसकी प्रशंसा करते हैं। लेकिन हम अपने नए शिक्षा पद्धति को अपने समाज के लिए अनुपयुक्त पाते हैं और इसका सारा दोष मैकाले की शिक्षा नीति को देते हैं। अब प्रश्न उठता है कि एक व्यक्ति हमारे इतने प्राचीन और उपयोगी शिक्षा प्रणाली को किस तरह उखाड़ फेंकने में सक्षम हो पाया। क्या हमारी कोई कमजोरी नहीं थी? आजादी के सत्तरसाल बाद भी हम उसके अभिशाप से मुक्त क्यों नहीं हो पाए? ऐसी क्या मजबूरी है कि हम मैकाले को कोसते हुए भी उससे दूर नहीं जा पा रहे हैं?

हमारे समाज में कहीं ना कहीं बाहरी आलोचना के प्रति उदासीनता या उसे झूठलाने का भाव रहा है। हम अपनी गलतियों को स्वीकार नहीं कर पाते हैं और सारा दोष किसी न किसी व्यक्ति या घटना पर थोपना चाहते हैं। जब अलबरूनी और अन्य विदेशी यात्रियों ने भारत के सती प्रथा जैसे कुरीतियों का विवरण और विश्लेषण दिया तो हम उसे अपने संस्कृति पर प्रहार समझ बैठे। अगर हम स्वयं में सुधार के लिए प्रेरित होते तो बहुत जल्द ही इन समस्याओं से उबर लेते हैं जिसके लिए हमें सदियों का समय लग गया। भारत में महिलाओं की दयनीय स्थिति को कैथरीन मैयो ने अपनी पुस्तक मदर इंडिया में प्रकाशित की तो भारतीय विद्वानों ने उसे बिना परखे नकार दिया। उस पुस्तक पर हमारे अंतरराष्ट्रीय छवि को खराब करने का आरोप लगा। अगर हम उस पर गंभीरता से विचार करते तो कहीं ना कहीं हमारे सुधार की कुछ संभावना थी।

मैकाले के मन में जो भी भावना रही हो, उसका प्रयास जो भी रहा हो, मगर इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि हम भारतीय अपने संस्कृति में गुणात्मक सुधार लाने के लिए, अपने शिक्षण पद्धति को उन्नत बनाने के लिए उनके नीतियों से सीख नहीं लिए। उसमें लिखा था कि 'भारत का चिकित्सा शास्त्र तर्कहीन है और जादू टोने का शास्त्र है। यहां का ज्योतिष शास्त्र बच्चों के विद्यालय के लिए भी हास्यास्पद होगा। इतिहास यहां के राजाओं से भरे पड़े हैं जो 30 फीट से भी अधिक लंबे थे तथा जिन्होंने तीस हजार वर्षों तक राज किया यहां का भूगोल दूध तथा मक्खन के समुद्रों से भरा पड़ा है।' निसंदेह इन बातों से पता चलता है कि मैकाले भारत के चिकित्सा शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र का सही मूल्यांकन नहीं कर पाए थे लेकिन इन बातों से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि यहां पर इतिहास लिखने की जो परंपरा रही है वह किस्से कहानियों का ही विवरण है । जो दोषपूर्ण है एवं इसमें तथ्यात्मक जानकारी नहीं मिलती है।

मैकाले अपनी रिपोर्ट में लिखते हैं कि जो लोग संस्कृत और अरबी सीखते हैं उसे हमें पैसा देना पड़ता है। इसके विपरीत अंग्रेजी सीखने वाले लोग हमें पैसे देते हैं। -इस तथ्य से भी कहीं न कहीं भारतीयों का अपने भाषा के प्रति अनिच्छा और अरुचि का बोध होता है। इस तरह के लोगों को प्रेरित कर पाना अत्यंत दुष्कर कार्य है। जब हम स्वयं के मातृभाषा और राजभाषा की कदर नहीं करेंगे तो फिर उसका उत्थान असंभव है।

मेकाले तुलना करते हुए विवरण देते हैं कि संस्कृत और अरबी पुस्तकों के प्रकाशन में एक लाख से अधिक व्यय करने पर भी उन पुस्तकों को कोई खरीदता नहीं है। जबकि भारत में इंग्लिश बोलने वालों की संख्या काफी कम होने पर भी बुक सोसाइटी के किताबों की आठ हजार प्रतियां प्रतिवर्ष बिक रही है।

निसंदेह मैकाले के तर्क में कुछ सत्यता थी इसलिए गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक ने 1835 में उसे विधेयक में बदल दिया था। इतने समय बीत जाने के बाद भी हम अपनी भाषा, अपने शिक्षा पद्धति को लेकर सतर्क नहीं हुए हैं। हमारा दायित्व है कि हम इसे नए सिरे से परिभाषित और स्थापित करें जिससे हमारे राष्ट्र का उत्थान हो सके। हमारी शिक्षण संस्थाएं सिर्फ डिग्रियां देने के लिए ही कार्य नहीं करें बल्कि समाज के लिए उपयोगी विचारक और सुधारक भी उत्पन्न कर सकें।

नागरी लिपि सम्मेलन

नागरी लिपि परिषद देवनागरी लिपि के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित है । इसका 42 वां अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन 27 और 28 सितंबर 2019 को नाम्बोल के एस. कुला महिला महाविद्यालय में किया गया था। यह जगह मणिपुर के विष्णुपुर में है। इसमें मणिपुर के सभी हिंदी प्रेमी काफी अधिक संख्या में जमा हुए। उसके साथ साथ भारत ही नहीं बल्कि विदेशों से भी हिंदी के कई विद्वान, भाषा शास्त्री और लेखक आए थे। इतने बड़े स्तर पर कार्यक्रम के आयोजन का श्रेय श्री सदाशिव को जाता है। उन्होंने लगभग दो महीने से इसकी तैयारी के लिए अथक प्रयास किए। सुश्री कंचन शर्मा, अचार्य मणिपुर विश्वविद्यालय , नागरी लिपि परिषद के कार्यकर्ता एवं मणिपुर विश्वविद्यालय विशेषकर एस.कुला की छात्राओं ने कार्यक्रम के संचालन में अत्यधिक मेहनत की। लेखा परीक्षा कार्यालय की तरफ से नराकास के सचिव श्री प्रभात रंजन इसमें भाग लिए।

कार्यक्रम के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ उप महालेखाकार लेखा परीक्षा सह नराकास के उपाध्यक्ष श्री प्रवेज आलम शामिल हुए। उनके साथ सीआरपीएफ के कमांडेंट श्री मुन्ना कुमार सिंह और मणिपुर सरकार में विजिलेंस के डायरेक्टर जनरल श्री प्रमोद अस्थाना भी शामिल थे।अध्यक्षीय भाषण में श्री परवेज ने दूर दूर से आए लोगों की सराहना की और राजभाषा हिंदी के उज्जवल भविष्य के लिए प्रयास करने के लिए अपनी राय दी। उनके वक्तव्य का सार यहां दिया जा रहा है-

मैं यह देखकर आश्चर्यचकित हूं कि मणिपुर जैसे सुदूर के राज्यों में भी हिंदी के इतनी अधिक जानकार लोग मौजूद हैं। हिंदी के प्रसार के लिए मणिपुर में जिन लोगों ने भी प्रयास किए हैं उन सभी को मैं दिल की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूं और भारत का एक नागरिक होने के नाते गौरवान्वित महसूस करता हूं। मणिपुर के समस्त छात्र- छात्राएं जो हिंदी में स्नातकोत्तर या डॉक्टरेट की पढ़ाई कर रहे हैं, बधाई के पात्र हैं। उनकी इतनी बड़ी संख्या देखकर मैं आश्वस्त हूं कि मणिपुर में भी हिंदी के विद्वानों की कमी नहीं रहेगी और ना ही कभी हिंदी के साथ भेदभाव हो सकता है।

मैं अपने कार्यालय के साथ-साथ अन्य कार्यालयों में भी जाता हूं। केंद्रीय सरकार के लगभग 60 कार्यालय हमारे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य हैं इसके अलावा मैं लगभग 20 और कार्यालयों को इस समिति में बहुत जल्द ही जोड़ने जा रहा हूं ताकि सभी जगह राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का कार्य सुचारू रूप से हो सके। मैं व्यक्तिगत रूप से इन चीजों में रुचि ले रहा हूं और इसकी निगरानी करता हूं जिससे कि हिंदी के प्रचार प्रसार के कार्य को कोई भी औपचारिकता मात्र नहीं समझे और इससे अन्य आवश्यक कार्यालय कार्यों की तरह ही समझा जाए। भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा में होने के कारण मैं इस संपूर्ण भारत और इसके अलावे विदेशों में भी आते-जाते रहता हूं । अपने सेवा के दौरान भारतीयों के बीच एक ऐसे संपर्क भाषा की जोड़ को भलीभांति समझता हूँ जो ना सिर्फ उसके भावनाओं को व्यक्त कर सकें

बल्कि उसके दिल के भी करीब हो। हिंदी के प्रति आप लोगों के उत्साह को देखकर मुझे भी अपने कार्य के लिए प्रेरणा मिल रही है।

भाषा किसी भी व्यक्ति के विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक होता है। अपनी मातृभाषा से इंसान भावनात्मक रूप से जुड़ा होता है। यह बात हम लोगों से छिपी नहीं है कि भारत के हर प्रांत में हर जिला में अलग-अलग भाषाएं बोली जाती हैं। हर भाषा के भी कई कई उपभाषा है और उसके भाषी उसी में अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। यह उसके लिए आनंद और गौरव का विषय होता है। कभी इंसान अपनी भाषा के साथ छेड़छाड़ को पसंद नहीं कर सकता है। इसलिए जो लोग राष्ट्र को एक संपर्क सूत्र में बांधने के लिए भाषा के महत्व को समझते हैं, उन्हें हमेशा इस बात को ध्यान में रखना होगा कि उसके प्रयास से दूसरों की भावना आहत नहीं हो। ऐसा नहीं होने पर लोग हमें यूरोप से आने वाली चलाक साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी तथा लुटेरों से तुलना करेंगे। हमारा प्रयास सदैव यही होना चाहिए कि हम प्यार और प्रोत्साहन की नीति को अपनाकर हिंदी की प्रचार करें। हमें दूसरों के भाषा और संस्कृति को भी सीखने में तत्परता दिखानी चाहिए । दूसरे भाषा के शब्दों को अपनाकर हम हिंदी में प्रयोग करेंगे तो इसे हिंदी का शब्द भंडार बढ़ेगा, साथ-साथ इसका प्रचार भी हो जाएगा।

दूर-दूर से जो भी लोग मणिपुर में आए हुए हैं, उनका प्रयास सराहनीय है। उनके आगमन से उल्लास और चहल-पहल का माहौल बना है । इसके साथ-साथ मणिपुर में हिंदी के अध्ययन, शोध कार्य,अध्यापन, और कार्यान्वयन में लगे सभी हिंदी प्रेमियों में एक नई स्फूर्ति का संचार होगा। इसके साथ साथ में मेहमानों से आशा करूंगा कि वह यहां से जाते वक्त मणिपुर से अच्छे-अच्छे शब्द गीत साहित्य और यादें उपहार के रूप में लेकर जाएंगे।

साहित्य से जुड़े हुए लोग कहीं ना कहीं सामाजिकता और नैतिकता को ज्यादा महत्व देते हैं। ऐसा होना भी चाहिए। जो भी लोग इस राष्ट्र की महत्व समझते हैं, वह हिंदी के महत्व को भी समझते हैं और इस संबंध में यह भी सत्य है कि उत्तर-पूर्व के इन राज्यों को उपेक्षित कर हम अपने लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए यह सम्मेलन सिर्फ नागरी लिपि के प्रचारकों और प्रशंसकों के लिए एक बात की जिम्मेदारी भी देता है कि वह बाहर जाकर मणिपुर के संबंध में लोगों के गलत धारणा को तोड़े और यहां के विविधता प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में बताए।

मणिपुर और नागालैंड में कई ऐसी भाषाएं हैं जिसके अपनी कोई भी लिपि नहीं है। नागरी लिपि परिषद के लिए इन क्षेत्रों में अपार संभावनाएं हैं और उनके प्रयास से कई भाषाएं लुप्त होने से बच सकती है।

मैं सभी लोगों को यहां आने के लिए एक बार पुनः हार्दिक बधाई देता हूँ और उम्मीद करूंगा कि भविष्य में भी मणिपुर जैसे सुदूर राज्यों में हिंदी का भव्य कार्यक्रम हो।

मणिपुर के रासलीला कलाकार

सर चार्ल्स इलियट के अनुसार मोहम्मद साहब से बहुत पहले से अरब, बगदाद और बलख का भारतवर्ष से गहरा संपर्क था। इसलिए भारत का चिंतन इस भू-भाग में काफी प्रचलित रहा होगा। जीव और ब्रह्म के बीच एकता तथा जीव का यह दावा करने का भाव कि मैं ब्रह्म हूं किसी भी प्रकार अभिनव अफलातून मत में नहीं खोजा जा सकता किंतु यह भारतीय वेदांत के लिए एक साधारण सी बात थी। सूफी मत आरंभ में मध्यम था किंतु बाद में वह बहुत निर्भीक हो उठा। यह निर्भीकता सीधे हिंदू धर्म से आई होगी। मनसूर 'अनलहक' पुकारने के अपराध में फांसी चढ़ा था और यह प्रमाणित बात है कि वह योग सीखने को भारत आया था। उसके बाद भी अनेक सूफी संत ज्ञान लाभ के उद्देश्य से भारत आए थे अथवा भारत के इतने समीप पहुंचे थे जहां उन्हें भारतीय ज्ञान और योग के गुरु मिल सकते थे। फरीदुद्दीन अत्तार हिंदुस्तानआए थे और तुर्कमेनिस्तान भी गए थे। जलालुद्दीन रूमी का जन्म बलख में हुआ था जहां एक समय बौद्ध मत का प्रधान केंद्र था।सूफी कवि शेखसादीबलख, गजनी, पंजाब और गुजरात में घूमे हुए थे। दक्षिण के सुल्तान मोहम्मद बहमनी ने हाफिज को भारत आने का निमंत्रण दिया था। जहाज के बर्बाद हो जाने से हाफिज भारत की यात्रा पूरी नहीं कर सके, किंतु भारतीय विचारों से उनका भी अच्छा संपर्क था।अरब और ईरान में उन दिनों यह साधारण विश्वास था कि ज्ञान और योग की शिक्षा लेने के लिए भारत जाना आवश्यक है। जो लोग भारत नहीं जा सकते थे उसके भी कान भारतीय ज्ञान के लिए अवश्य खुले रहते होंगे।

(संस्कृति के चार अध्याय-रामधारी सिंह दिनकर)

"पुराण क्या है? घटना सत्य नहीं है किंतु उसका शिक्षागत मूल्य है। शिक्षागत मूल्य रहने से ही उसे पुराण कहेंगे। जैसे व्यास देव ने अट्ठारह पुराण लिखा था। पुराण सब कथानक है। कोई सच नहीं है। पुराणों में नाना प्रकार के देव-देवियों का वर्णन किया गया है। अनेक प्रकार की बातें कही गई हैं। अवश्य ही बातें सत्य नहीं थी, इसलिए पुराणों के लिखने के बाद व्यास देव के मन में ग्लानि भी हुई थी। आत्मग्लानि हुई इसलिए उसने सोचा कि इस प्रकार के ग्रंथों की रचना मैंने क्यों की? इसलिए उन्होंने परम पुरुष से क्षमा प्रार्थना भी की थी-

रूपं रूपविवर्जितस्य भवतो यद्ध्यानेन कल्पितम् ।
स्तुत्याअ् निर्वचनीयता खिलगुरो दूरीकृता यन्मया ।।
व्यापित्वं च निराकृतं भगवतो यत् तीर्थ यात्रादिना ।
क्षन्तव्यं जगदीशो ताद्विकलता दोषत्रयं मत्कृतम् ।।

' हे परम पुरुष! तुम्हारा कोई रूप नहीं है। तुम अरूप हो। तब भी मैंने नाना देवी देवताओं का, किसी का दस हाथ, किसी की चार भुजा, ऐसा-वैसा, नाना प्रकार का वर्णन किया है। मेरा एक ही उद्देश्य था- लोक शिक्षा देना। किंतु ऐसा करने में, हे अरूप! तुमको मैंने रूप के बंधनों में आबद्ध करने की चेष्टा की है। यह मेरा प्रथम अपराध है ।

द्वितीय अपराध हुआ है- तुम गुनातीत हो। सब गुण तुम्हारे अधीन है। इसलिए तुमको गुण से कैसे बांधा जा सकता है? तुम्हारे नाना गुणों का वर्णन कर स्तुति कथा प्रस्तुत कर दी है, इससे तुमको ही छोटा कर दिया गया।

मैंने कहा है, अमुक तीर्थ में भगवान ने यह काम किया है, अमुक तीर्थ में वह काम किया है, यह कह कर तुमको विशेष विशेष स्थान में बद्ध करने की, बांधकर रखने की चेष्टा की। यह भी एक अन्याय हुआ है क्योंकि संपूर्ण विश्व ब्रह्मांड ही तो तीर्थ है। तुम सभी जगह में रहते हो तथापि मैंने विशेष विशेष जगह तुम को सीमित करने की चेष्टा कर तृतीय अपराध को किया है। इसलिए मुझे क्षमा करो। इन तीन भूलों के लिए, तुम तीन दोषों के लिए मुझे क्षमा कर दो।'

यही है पुराण। घटना सत्य नहीं है किंतु उसमें शिक्षागत मूल्य बहुत अधिक है।

(साभार : श्री श्री आनंदमूर्ति जी)

शब्द चयनिका

देश- चिन्हित या प्रदर्शित स्थान विशेष को देश कहेंगे । क्या करने योग्य है क्या नहीं है यह निर्देशन बारीकी से समझाया जाय तो उसे कहते हैं **उपदेश** । जहाँ पर क्या करणीय है, क्या अकरणीय है बारीकी से बताया जाता है और तदनुसार करने का आदेश दिया जाता है उसे कहा जाता है **निर्देश** ।
जहाँ क्या करणीय है क्या अकरणीय है उस संबंध में कुछ कहा जाए या न कहा जाए लेकिन कुछ करने को बाध्यतामूलक बनाया जाता है तो उसे कहा जाता है **आदेश** ।

न्यास का अर्थ है – स्थापना करना। प्राचीन काल में घर शिला (पत्थर) से बनाया जाता था इसलिए घर बनाने के उद्घाटन से शब्द आया **शिलान्यास** । जिस व्यक्ति ने आदर्श के लिए, परमपुरु के लिए सम्यक रुप से अपने आपको 'न्यास' किया है,वह है **सन्न्यासी**।
उप का अर्थ है आस पास । कोई वस्तु यदि किसी के आस पास रख दी जाए तो उसे कहते हैं **उपन्यास** । इसका फारसी है पेश करना । नोवेल या फिक्शन के बदले कथान्यास शब्द सही है ।
जहाँ कलि चूना और काता रस्सी का व्यवसाय होता था उस स्थान का नाम रखा गया – **कलिकाता**। यह नाम वाचक विशेष्य है।

ऊढ़ का अर्थ है जिसने विवाह किया है । **व्यूढ** (वि+ ऊढ) का अर्थ है जिसने समाजस्वीकृत ढंग से विवाह किया हो । मनुष्य जाति को सांस्कृतिक ध्वंस से बचाने के लिए शिव ने विवाह प्रथा की शुरुआत की इसलिए उन्हे व्यूढ शिव कहते है जो परवर्ती काल मे बुढो शिव हो गया । यहाँ बुढो का अर्थ वृद्ध नहीं है ।
उपाध्याय (उप + अध्याय) का अर्थ हुआ अध्यापक या लेक्चरर । उपाध्याय= उआइझाय= उआझा =**ओझा**= **झा** ।

उद या उदक का अर्थ होता है जल । बिलार जैसा जीव जो पानी में रहता है उसे ऊद्बिलाव कहते हैं।
उद्गीत का भावारूढार्थ होता है- जो गाया गया है, योगारूढर्थ मे सामवेद ।
ईह धातु का अर्थ है लगातार चेष्टा करते जाना । जो व्यक्ति बिना रुके प्रयास करते जाता है उसे संस्कृत में **ईहासन** (इसी आसन में) कहते हैं। जिस व्यक्ति ने समाज में आदर्श की स्थापना के लिए अथक प्रयास किया है उसे कहते हैं **ईहकेतन** । स्त्रीलिंग में **ईहकेतना** ।

उन्द् धातु क अर्थ है जलसिक्त करना या भींगाना । उन्द् + ल्यूट लगाकर **ओदन** शब्द पाते हैं जिसका भावारूढार्थ है जल से भिंगाया गया या नरम किया गया योगारूढर्थ में भात । जिस व्यक्ति ने सतपथ पर रहकर धन कमाया है उसके अन्न को पाप का अन्न नहीं कहा जायेगा क्योंकि उसका अन्न शुद्ध है । ऐसे व्यक्ति को शु**द्धोधन** कहा जा सकता है ।
इल का अर्थ है पानी मे उतरना, ईश का अर्थ है शासक । **इलीश** योगारूढ़ार्थ में मछली विशेष का नाम है ।
किसी सत्ता को अपने वश में लाने की सिद्धि को वशित्व कहते हैं । इस सिद्धि में प्रतिष्ठित को **वशिष्ठ** कहा गया ।

शक् धातु का अर्थ है सकना या दृढ होना । जो शरीर को दृढ करता है उसके लिए शक्तु शब्द प्रयोग होता है । जिसका योगारुढ़ार्थ है चने का सत्तू । शकुनि (ईगल जातिय पक्षी) की चोंच की शक्ति असाधारण होती है । इसलिए उसे शकुन्त कहते हैं ।

प्राचीन अमेरिका की माया सभ्यता विश्व की महत्वपूर्ण सभ्यताओं में से एक है। चक्का का प्रयोग नहीं होने से अनेक सभ्यताओं से पिछड़ते चला गया। इस सभ्यता के कारण अमरीका का संस्कृत नाम **मायाद्वीप** पड़ा ।

ऊन/ उन धातु का अर्थ है कम करना या क्षयमानता के पथ पर आना। ऊन शब्द का अर्थ है कम । ऊनविंश कहने से मतलब है विंश अर्थात बीस से कम, योगरूढार्थ मे ऊन्नीस। उसी तरह उनतीस, उन्तालीस,उन्चास आदि है।

महात्मा बुद्ध जिस जगह धर्म उपदेश देते थे वह जगह परवर्ती काल में **सोनवर्षा** कहलाया और जिस जगह रात बिताते थे वह जगह **धरहरा** (धौरहरा) कहलाता था । इसलिए बिहार में ऐसे नामों की अधिकता है।

'**चलति**' का अर्थ है सामान्य रूप से चलना, '**चरति**' का अर्थ है खाते-खाते चलना। '**अटति**' का अर्थ है देखते देखते सीखते सीखते चलना। 'परि' पूर्वक अट् धातु से पर्यटक शब्द बना। ' **व्रजति** ' का अर्थ है आनंद प्राप्ति के साथ चलना। अर्थात चल रहा हूँ और चलने के आनंद में मस्त हूँ, विभोर हूँ। श्री कृष्ण कहते हैं - मामेकं शरणं व्रज। परम पुरुष की ओर जीव का चलना आनंदमय है।

(यहां श्री प्रभात रंजन सरकार द्वारा लिखित ‘शब्द चयनिका’ का एक अंश प्रस्तुत किया जा रहा है। इस पुस्तक का सभी खंड और ‘वर्ण विचित्र’ पुस्तक का सभी खंड भाषा वैज्ञानिकों और शोधार्थियों के लिए वांछनीय है।)

मणिपुरी हिंदी शब्दावली

अतेकपा	– नया,ताजा
अथुम्बा	- मीठा
अरेंगबा	- रचनाकार, लिखनेवाला
अरोयबा	- समापन
अनम कनबा	– जिद
इकाइबा	– शरम लज्जा
इता	- सखि
इन्नफि	- चादर, ओढनी
इपन	- ताउ, पिता के बडे भाई
इपाम	- मायका, स्त्री के माता पिता का घर
इपु	– दादा
इमा	- माता
ईरोइबा	- तैराकी
उनबा	– दहेज
उशिंशा	- दाल चीनी
उशोई	- बाँस का अंकुर
नापी	– घास
चरु	– पुआल
वाहै	– शब्द
लाइरिक	– पुस्तक
मतम	– समय
फुरित	– कुरता
खुत	– हाथ
चेंग	– चावल थबक– काम
हई-रा	– फल
लाई	- देवता
चुजाक	- मकई
लाईसंग	- मंदिर, भगवान का घर
चेना	- पृष्ठ
ईथत	- द्वीप
येरुम	- अंडा
योत	– लोहा
लइ	- लकीर
लमजा	- अनाथ
उचेक	– पक्षी
कनाना	- किस ने
कनानो	- कौन
थौबु	– मालिक
थौरम	– सिलसिला
थोइबा	- विजेता
थेबा	- खरगोश
थुनमक	- शीघ्र
थाजा	- चांद
थाजबा	- भरोसा, विश्वास
थांग	- तलवार
थांगोल	- हंसुआ
थाखाय	- पक्ष
थाउ	- तेल
थवाय थाबा	- प्राण त्यागना
थम्बाल	- कमल
तोंशा	- मांस
तुरेल	- नदी
तान्जा	- अवसर
चींबुरोइ	- आदिवासी
चींदोल	- शिखर
चिंजाक	- अहार
चानबीदुना	- कृपया
चहीगी	- सलाना, वार्षिक
चरा हेनबा	- उपवास
चयोम	- पोटली
चम्प्रा	– नींबु
खोरिरोल	- साहित्य
खूगा	– तलवा, जूते का तली
खूजि	– कंगना, चूडी
खुम्बा	- उत्तर देना
वाहंग	- प्रश्न
पाओखुम	- उत्तर
खुनुं ईशै	– लोक गीत
खुंजा	- ग्रामवासी
खित	– अधिक, बहुत
खिजिक	– थोडा
शाफम	- कारखाना
लैरोन	- जमीन

लैकोन	- बगीचा
लेम्ना	- मुफ्त
लूखाक	- जुठन
लुगुन	- जनेउ
लीबा	- कहानी कहना
लीशींग	- हजार
लिकला	- ओस, शबनम
लीकपा	- कंजुस
लिलारोय	- अभिनेता
लाल	– युद्ध
वारी	- कहानी
लायरोन	- श्लोक, मंत्र
लान्मी	- सेना,फौज
लानफा	- युद्धबंदी
फाइरेन	- फागुन मास
फमकाबा	- पदोन्नति
फमताबा	- पदावनति
फम्नबा	- बैठने का वस्तु
पोक	- सफेद बाल
पेरुक	- ब्राह्मी बूटी
पुंग्दोन	- अमरुद
पीशुम	- भौंह
पीशुम शूकपा	- त्योरी चढाना
पुया	- धर्मग्रंथ
पायमा	- मन, चित्त
पामेन	- पेड़
पाउखों	- पहेली
नोंग्माइजिंग	- रविवार
चूमथाङ	- इंद्रधनुष
नुमित	- सुर्य
नुमितथोकपा	- सुर्योदय
नुंशित	- हवा
नुंशि वारी	- प्रेम कथा
नुंशिबा	- प्यार, अनुराग
नुंदाङ	- रात
नुंशा	- धूप,ताप
थौनि, हाइजबा	– याचना, निवेदन

मीरम	- परदेश
मीयाम तिनबा	– सम्मेलन, जमावडा
मीनाइ	- नौकर
मीता लुबा	- चालाक
मीचम	- आम आदमी
मरैबाक नींगबा	– देशभक्त
मरेक	– गंदगी
मरिशुबा	- चौथा
मरान	– अपराध
मरानयाय	- भवन, इमारत
मरान लैतबा	- निर्दोष
मरान लैरबा	- दोषी
नाइतोम	– अकेला
नाउकोनबा	– पालन-पोषण
हू	- विष
लमजाओ	- मैदान,चरागाह
लम्पाक	– मैदान, खेल मैदान
लम्बोइबा	- सन्यासी, साधु
लफोय	– केला
लफू	- केला का पौधा
लफांग	- गुच्छा
लफू थरो	- केला का फुल
लमकोइबा	– पर्यटक
लमशा	- जंगली जानवर
ललोनबा	- कारोबार
लैकांग	- कालिख
लैकुत	– खाई
इराइ	- शुक्रवार
शाजिबु	- वैशाख
चाम्मा	- सौ
चनि	- दो सौ
अमा	- एक
तरा	- दस
कुन	- बीस
कुन्थ्रा	- तीस
निफु	- चालीस
यांखै	- पचास

हुम्फु	- साठ
हुम्फुतरा	- सत्तर
मरिफु	- अस्सी
मरिफुतरा	- नब्बे
मिङ	- नाम
हन्ना हन्ना	- बार बार
अमसुं	- और
मसि	- यह
मदु	- वह
अदुगा	- उसके बाद
मखा दा	- नीचे में
मथक ता	- ऊपर में
ओइरोमदा	- बायें
येतलोमदा	- दायें
खरगा	- थोड़ा
याम्ना	- खूब
नोंगपोक	- पूरब
नोंचूप	- पश्चिम
अवाङ	- उत्तर
खा	- दक्षिण
पुस्तक पढ़ो	- लाइरिक पाओ
बात मत करो	- वारी शागनु
जल्दी आओ	- थुना लाओ
उसे बुलाओ	- माबु कौरो
बाहर जाइए	- मपान्दा चतपियु
यह सच है	- मसि चुम्मी

अङोवा	- सफेद
अमुबा	- काला
फुंगावारी	- लोककथा
यारे यारे	- ठीक है
खुरुमजरी	- नमस्कार
मांदा	- आगे
तौ	- करो
तौबियु	- कीजिए
थागतचारी	- धन्यवाद
ताओ	- सुनो
ताबियु	- सुनिए
फम्मु	- बैठो
फम्बियु	- बैठिए
तुंदा	- पीछे
इयु	- लिखो
इबियु	- लिखिए
होय	- हां
नत्तै	- नहीं
खोंग	- पैर

यह सच नहीं है	- मसि चुमदे
मैं समझता हूं	- ऐइ खंङि
मत लड़ो	- फुनगनु
गुस्सा मत करो	- शाओगनु
मैं आऊंगा	- ऐइ लाकन्नि
मैं खेलूंगा	- ऐइ शान्नगनि
मैं राम के घर जाऊंगा	- ऐइ रामगी युम चतकनि

अन्य गतिविधियां

महालेखाकार कॉलोनी में बच्चों के लिए चिल्ड्रन पार्क का उद्घाटन

सामुदायिक साफ सफाई एवं कचरा प्रबंधन हेतु शिविर

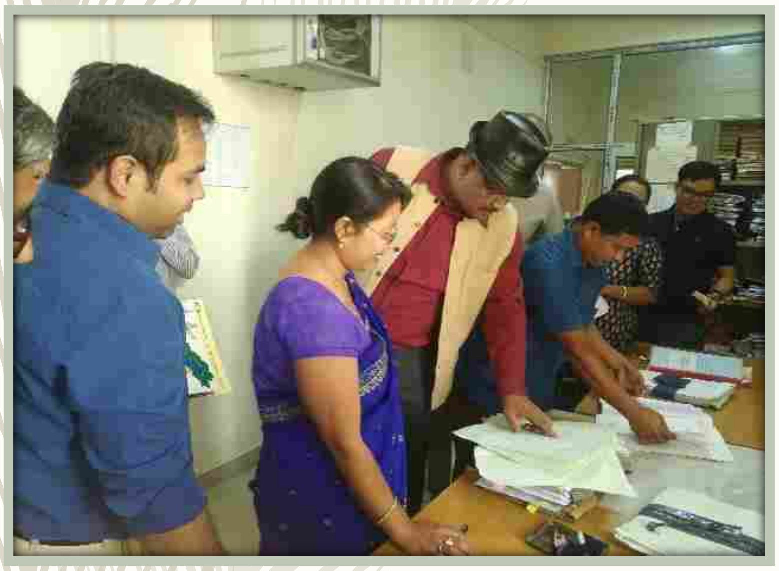

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में राजभाषा के कार्यों का निरीक्षण व.उप महालेखाकार श्री परवेज आलम एवं कमांडेंट श्री मुन्ना कुमार सिंह

कार्मिकों के लिए ओपन जिम की शुरुआत

हिंदी कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में श्री मुन्ना कुमार सिंह, सीआरपीएफ कमांडेंट प्रशिक्षण देते हुए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति इंफाल का बैठक

हिंदी पखवाड़ा कार्यालय का सबसे बड़ा उत्सव होता है। इस दौरान कार्मिकों के लिए, उनके बच्चों के लिए, सीआरपीएफ के जवानों के लिए कई

तरह की प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम और पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया जाता है। प्रस्तुत है कुछ झलकियां।

यादों के झरोखे से....